केवल आप के लिये

गांव–गांव शहर–शहर देश दुनियां में अपनों तक पहुंचना है तो भारतीय बस्ती दैनिक वेब www.bhartiyabasti.com और उसका छपा संस्करण सबसे बेहतर माध्यम

सम्पर्क-bhartiyabasti@gmail.com

मो0 9450567450| 9336715406

दैनिक भारतीय बस्ती

भारतीय बस्ती

www.bhartiyabasti.com के लिये विज्ञापन बुक कराये। विचार, प्रचार का सशक्त माध्यम सम्पर्क

मो0 9450567450

9336715406

भारतीय बस्ती आमंत्रण मूल्य 2रूपया

R.N.I. 38784/81 डाक पंजीकरण सं0 B.S.T 59 बस्ती, वर्ष :45 अंक 297 मंगलवार 21 मई 2024 (बस्ती संस्करण) बस्ती एवं अयोध्या–फैजाबाद से एक साथ प्रकाशित पृष्ठ :4मूल्य:3.00 रुपया www.bhartiyabasti.com

एक नजर

तीन चिकित्सकों पर गैर इरादतन हत्या का मुकदमा

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती,। नवजात के इलाज में लापरवाही के आरोप में प्राइवेट अस्पताल के तीन चिकित्सकों के खिलाफ छावनी पुलिस ने गैर इरादतन हत्या का केस दर्ज किया है। न्यायालय के आदेश पर केस दर्ज कर पुलिस विवेचना कर रही है। अतुल तिवारी निवासी कुर्थिया, थाना हर्रैया ने अपनी तहरीर में कहा है कि उन्होंने अपनी भाभी रूपा तिवारी का प्रसव कराने के लिए 31 मार्च 2023 को शर्मा हॉस्पिटल, छावनी बाजार में डॉ. सुशील शर्मा और डॉ. शीला शर्मा की देखरेख में भर्ती कराया। जांच के बाद नार्मल प्रसव का आश्वासन दिया गया।

पीएम मोदी के रैली की तैयारियां तेज

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। राजकीय पॉलीटेक्निक के मैदान पर होने वाली प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की जनसभा के दिन बस्ती के सरजमीं पर आठ हेलीकाप्टर गड़गड़ाएंगे। उनकी जनसभा में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, केंद्रीय मंत्री अनुप्रिया पटेल, सुभासपा अध्यक्ष ओमप्रकाश राजभर, निषाद पार्टी अध्यक्ष संजय निषाद और भाजपा प्रदेश अध्यक्ष हेलीकाप्टर से आएंगे। पॉलीटेक्निक के मैदान पर चार हेलीपैड बन रहे हैं, जिसमें तीन प्रधानमंत्री और एक मुख्यमंत्री का होगा। इसके अलावा एपीएन व जीआरएस के मैदान पर दो, पुलिस लाइन व जीआईसी के एक–एक हेलीपैड का उपयोग किया जाएगा।

प्रधानमंत्री के आगमन को लेकर भाजपा ने तैयारियां तेज कर दी हैं। सभी पांच विधानसभा क्षेत्रों में बैठकें हो रही हैं। महाविजय संकल्प रैली में अधिक से अधिक लोगों की भागीदारी हो, इसके लिए जन–जन से संपर्क किया जा रहा है। रैली स्थल पर वाटरप्रूफ टेंट लगाया जा रहा है। तीनों हेलीपैड अंतिम दौर में हैं। रैली स्थल पर टेंट, मंच, बल्ली लगाए जाने का कार्य दिन–रात चल रहा है। पीएम की रैली का मुख्य मंच आठ फुट ऊंचा व 60 फुट चौड़ा होगा। यह पीडब्लुडी अभियंता की देखरेख में बन रहा है। रविवार सुबह से ही एसपीजी ने भी यहां डेरा डाल दिया है। एसपीजी के अधिकारियों ने रैली स्थल का जायजा लिया। सुरक्षा पर मंथन हुआ। अधिकारियों ने बातचीत के बाद एसपी ने मुख्यालय से बी बुक के अनुसार फोर्स की मांग डिमांड दो दिन पहले ही कर दी थी।

पुण्यतिथि पर याद किये गये महेन्द्र प्रताप

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

विक्रमजोत (बस्ती)। विक्रमजोत विकास क्षेत्र के संत तुलसीदास इंटर कॉलेज बस्थनवां में सोमवार को संस्थापक प्रधानाचार्य स्वर्गीय महेंद्र प्रताप नरायण पाण्डेय 'राजन पाण्डेय ' की पुण्यतिथि मनाई गई । विद्यालय की प्रबंधक शशी पाण्डेय ने उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उनके त्याग आदर्शों पर चर्चा की और उसे अमल में लाने के साथ साथ संस्था को प्रफुल्लित रखना ही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि देना बताया ।

इससे पूर्व विद्यालय में अखंड रामायण पाठ का आयोजन कर विशाल भंडारे का भी आयोजन किया गया। जिसमें स्कूल के छात्रों व आसपास के लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया। कार्यक्रम में विद्यालय के प्रधानाचार्य के अलावा वरिष्ठ शिक्षक लक्ष्मण पांडेय , दिनेश वर्मा बलाक प्रमुख बीकापुर , संतोष कुमार शुक्ल , सूर्य प्रताप नारायण पांडेय , दिलीप श्रीवास्तव , श्याम शंकर पाल , विनोद कुमार पांडेय, धर्मेंद्र मोहन मिश्र , आशुतोष श्रीवास्तव , पुरुषोत्तम आर्य , संदीप कुमार सिंह , विनोद कुमार त्रिपाठी , अशोक गुप्ता , सेवानिवृत्त शिक्षक बाबूराम जायसवाल , कौशल किशोर तिवारी , पूर्व प्रधानाचार्य हरीराम शुक्ला , दिलीप कुमार श्रीवास्तव, अनिल कुमार दूबे सहित क्षेत्र के लोग मौजूद रहे।

पांचवें चरण में 49 सीटों के प्रत्याशियों का चुनावी भाग्य ईवीएम के हवाले

नई दिल्ली (आभा)। लोकसभा चुनाव के 5वें चरण में 8 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों की 49 सीटों पर मतदान हुआ। इस दौरान औसतन 57.47 प्रतिशत वोटिंग हुई। सभी सीटों के लिए मतदान सुबह 7 बजे शुरू हुआ और शाम 6 बजे तक चला। चुनाव आयोग ने बताया कि ओडिशा विधान सभा के दूसरे चरण के मतदान में बाकी 35 सीटों पर शाम 5 बजे तक 60.54 प्रतिशत वोट डाले गए थे। इस चरण में सबसे अधिक मतदान पश्चिम बंगाल में हुआ है, जहां शाम पांच बजे तक सर्वाधिक 73.00 प्रतिशत मतदाताओं ने वोट डाले थे। महाराष्ट्र में सबसे कम 48.66 प्रतिशत मत पड़े थे। आयोग के सूत्रों के अनुसार, मतदान कुल मिलाकर शांति पूर्ण चल रहा है।

लोकसभा चुनाव के पांचवें चरण में उत्तर प्रदेश की 14 लोकसभा सीटों पर सोमवार को कड़ी सुरक्षा के बीच मतदान संपन्न हो गया। लखनऊ पूर्वी विधानसभा उपचुनाव के लिए भी वोटिंग हुई। पांचवे चरण में शाम छह बजे तक यूपी में करीब 55.80 प्रतिशत वोटिंग हुई है। बतादें कि मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा ने बढ़ती गर्मी को देखते हुए हर मतदान केंद्र पर पेयजल, धूप से बचाव, अनवरत बिजली आपूर्ति आदि के समुचित इंतजाम करने के निर्देश दिए थे। मतदान सुबह सात बजे से शुरू होकर शाम छह बजे तक चला, जो भी मतदाता शाम छह बजे तक पोलिंग बूथ पर कतार में उपस्थित रहे, उन सभी वोटरों ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया।

बिहार में 6वें चरण के लोकसभा चुनाव में सीतामढ़ी, मधुबनी, मुजफ्फरपुर, सारण और हाजीपुर संसदीय क्षेत्र में शाम 6 बजे मतदान संपन्न हो गया। इस दौरान लगभग 56 प्रतिशत मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया। बिहार के मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी एचआर श्रीनिवासन ने सोमवार को बताया कि शाम 6 बजे तक इन पांच लोकसभा क्षेत्रों में 55.85 प्रतिशत मतदाताओं ने मतदान किया है, जो वर्ष 2019 के पिछले लोकसभा चुनाव से 1.22 प्रतिशत कम है। पिछले लोकसभा चुनाव में इन्हीं संसदीय क्षेत्र में 57.07 प्रतिशत मतदान हुआ था। कुछ बूथों पर मतदान समाप्ति के पहले बड़ी संख्या में मतदाता कतार में लगे हुए थे, उन्हें वोट करने की इजाजत है। इसलिए, मतदान के अंतिम आंकड़े में परिवर्तन हो सकता है।

आम चुनाव के 5वें चरण पश्चिम बंगाल की 7 लोकसभा सीट पर सोमवार को 5 बजे तक 73 प्रतिशत मतदान हुआ। निर्वाचन आयोग के एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि आरामबाग संसदीय क्षेत्र में सबसे अधिक 76.90 प्रतिशत मतदान हुआ, जिसके बाद बनगांव में 75.73 प्रतिशत, उलुबेरिया में 74. 50 प्रतिशत, हुगली में 74.14 प्रतिशत, श्रीरामपुर में 71.18 प्रतिशत, हावड़ा और बैरकपुर लोकसभा क्षेत्रों में 68. 84–68.84 प्रतिशत मतदान हुआ। मतदान सुबह 7 बजे शुरू हुआ और शाम 6 बजे तक जारी रहा।

10 साल में भाजपा सरकार की हर बात झूठी साबित हुई– अखिलेश यादव

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। सपा मुखिया अखिलेश यादव ने कहा कि नौजवानों को अब तक नौकरी नहीं मिली, क्योंकि पेपर लीक हो जा रहे हैं। सरकार ने जान–बूझकर पेपर लीक करवाकर नौजवानों का एक तिहाई जीवन बर्बाद कर दिया है। बुलडोजर चलाने वाले मुख्यमंत्री ने पेपर लीक करने वालों के घरों पर बुलडोजर नहीं चलाया। अखिलेश यादव ने सोमवार बस्ती के राजकीय इण्टर कालेज के मैदान में सपा प्रत्याशी राम प्रसाद चौधरी के समर्थन में में चुनावी जनसभा को संबोधित किया। भीषण गर्मी के बावजूद खचाखच भरे परिसर में अखिलेश यादव ने कहा कि पिछले 10 साल में सरकार की हर बात झूठी साबित हुई है। किसानों की आय दोगुनी नहीं हुई। डीजल, खाद, बिजली महंगी हो गई है। किसानों की लागत नहीं निकल पा रही है। सरकार ने किसानों के कर्ज माफ नहीं किए। किसानों पर कर्ज का बोझ बढ़ता ही जा रहा है।

कहा कि उद्योगपतियों का 25 लाख करोड़ माफ कर दिया। एंबुलेंस और डायल 100 उन्होंने ही दिया था। उल्टा–पुल्टा मुख्यमंत्री ने उसे 112 कर दिया। इससे क्विक रिस्पांस टाइम बढ़ गया। वैक्सीन, इलेक्ट्रोल बांड और कर्जमाफी पर तंज कसते हुए कहा कि चंदा लाखों और हजारों रुपये लिया जाता है लेकिन भाजपा ने तो हजार करोड़ लिया है। सपा की जनसभा में सीएम योगी और मोदी को निशाने पर लते हुए अखिलेश ने कहा, अच्छे दिन का वादा करके जनता को सड़कों पर ला दिया। उन्होंने कहा कि बड़ा झूठा लखनऊ है या दिल्ली? क्योंकि एक भी वादा पूरा नहीं हुआ। उन्होंने कहा कि यह चुनाव संविधान खत्म करने और बचाने की लड़ाई है। भाजपा की सरकार बनी तो आपके अधिकार समाप्त हो जाएंगे।

सपा मुखिया ने कहा कि सरकार ने कोरोना वैक्सीन लगवा दी। उससे चंदा भी लिया। अब वैक्सीन वापस ली जा रही है क्योंकि उसे लगाने वालों की जान जा रही है। मैंने तो नहीं लगवाई थी। अब सरकार कह रही है कि वैक्सीन वापस ली जा रही है। जिसके शरीर में घुल गई, उसे कैसे वापस लेंगे? उन्होंने कहा कि दरअसल यह सरकार जान और संविधान के पीछे पड़ी है। लेकिन जो लोग संविधान बदलने की बात कह रहे हैं, जनता उन्हें ही बदल देगी। चार जून को खुशियों का दिन आएगा, ऐसा जनता की ओर से रुझान आ रहा है। चार जून को न सरकार का मंत्रिमंडल होगा और न ही मीडिया मंडल। सपा जिलाध्यक्ष एवं विधायक महेन्द्रनाथ यादव, राजेन्द्र चौधरी, कविन्द्र चौधरी , गठबंधन दलों के नेताओं के साथ ही हजारों की संख्या में लोग मौजूद रहे।

शत प्रतिशत मतदान के लिये सेल्फी प्वाइन्ट लगाकर दिया संदेश

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। सनातन धर्म चेतना चैरिटेबल ट्रस्ट रजि0 के द्वारा पाण्डेय बाजार स्थित मारवाड़ी मन्दिर के सामने मतदाता जागरुकता अभियान का शुभारम्भ सेल्फी प्वाइन्ट लगाकर किया। शत प्रतिशत मतदान करने के लिए लोगों को प्रोत्साहित किया गया। ट्रस्ट के अध्यक्ष राजेश मिश्र ने कहा कि लोकतंत्र के इस महापर्व में मतदान करने योग्य सभी लोगों को हिस्सा लेना चाहिए, मतदान आप का लोकतांत्रिक अधिकार है, इसलिए मतदान की तिथि को सभी लोग बूथ तक जाएं और मतदान करें।

"यूथ चला बूथ" के नारे के साथ सभी लोगों ने शत प्रतिशत मतदान करने का संकल्प लेते हुए सेल्फी प्वाइंट के साथ अपना अपना फोटो खिंचवाया। मनीष शर्मा, किशोरी फाउंडेशन अध्यक्ष देवाशुं गुप्ता, मनीष गुप्ता जी, गौरव गुप्ता, सतीश सिंघल, सचिन भाटिया, हर्ष कसेरा, नगेन्द्र सोनकर, संतोष गुप्ता, संतोष मौर्या, गौरव जयसवाल, अमन सिंह, सभासद सोभी सोनकर, छोटू सोनकर, राम अवतार गोड़ सुनील, डी के सिंह, हरिश्चंद्र अग्रहरि, राज गुप्ता, विष्णु जयसवाल, विनोद सोनकर, जसी सोनकर,गोल्डी गोस्वामी, मनीष जयसवाल, विजय गुप्ता इन्द्र पाल प्रजापति, हरिश्चंद्र पांडे,ध राजेन्द्र, गीता, प्रमोद पाण्डेय, विशाल पाण्डेय, राहुल मिश्र आदि तमाम लोग उपस्थित रहे।

हेलीकाप्टर क्रैश में मारे गए ईरानी राष्ट्रपति और विदेश मंत्री

तेहरान (आभा)। ईरान के राष्ट्रपति इब्राहिम रईसी नहीं रहे। खबर है कि हेलीकॉप्टर क्रैश में रईसी और ईरान के विदेश मंत्री हुसैन अमीर अब्दुलहियान की मौत हो गई है। ईरान सरकार की ओर से आधिकारिक तौर पर इस घटना की पुष्टि कर दी गई है। रविवार को हेलीकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। इसमें ईरान के कई अन्य अधिकारी भी सवार थे। समाचार एजेंसी रॉयटर्स से बातचीत में अधिकारियों ने बताया है, राष्ट्रपति रईसी, विदेश मंत्री और हेलीकॉप्टर में सवार सभी अधिकारियों की क्रैश में मौत हो गई है। रिपोर्ट के अनुसार, ईरान की मेहर न्यूज एजेंसी की तरफ से भी मौत की पुष्टि कर दी गई है। इससे पहले रॉयटर्स को ईरान के एक अधिकारी ने बताया था कि रईसी और अब्दुलहियान को ले जा रहा हेलीकॉप्टर क्रैश होने के बाद बुरी तरह जल गया था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस घटना पर दुख जताया है। उन्होंने लिखा, ईरान के इस्लामिक गणतंत्र के राष्ट्रपति डॉक्टर सैयद इब्राहिम रईसी के निधन की खबर सुनकर सदमा लगा है। भारत और ईरान के संबंधों को मजबूत करने में उनके योगदान को हमेशा याद किया जाएगा। उनके परिवार और ईरान की जनता के प्रति मेरी संवेदनाएं हैं। इस दुख की घड़ी में भारत, ईरान के साथ खड़ा है। खबर है कि रईसी समेत अन्य अधिकारी अमेरिका में बने 212 हेलीकॉप्टर में यात्रा कर रहे थे। हाल ही में ईरान के रेड क्रीसेंट के प्रमुख पीर हुसैन कोलिवैंड ने बताया था, 'क्रैश साइट का पता चलने के बाद हेलीकॉप्टर के यात्रियों में से किसी के भी जीवन के संकेत नहीं मिले हैं। कहा जा रहा है कि घटनास्थल बेहद दुर्गम घाटी में मौजूद है, जहां बचाव दल को पहुंचने में काफी मशक्कत करनी पड़ी। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक दुर्घटनाग्रस्त हेलीकॉप्टर काफिले में से एक हेलिकॉप्टर को देश के उत्तर में घने कोहरे के कारण परेशानियों का सामना करने के बाद रविवार को हार्ड लैंडिंग करनी पड़ी।

पीएम मोदी, सीएम योगी की नीतियों के बूते भाजपा बनायेगी जीत का रेकार्ड- रमाकान्त पाण्डेय

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती । लोकसभा चुनाव में बस्ती मण्डल में भारतीय जनता पार्टी प्रत्याशी हरीश द्विवेदी, डुमरियागंज से जगदम्बिका पाल और संतकबीर नगर से प्रवीण निषाद की जीत सुनिश्चित करने के लिये पार्टी के वरिष्ठ नेता रमाकान्त पाण्डेय ने ताकत झोंक दिया है। सोमवार को प्रेस को जारी विज्ञप्ति के माध्यम से रमाकान्त पाण्डेय ने बताया कि जनता की जुबान पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की कल्याणकारी नीतियों और योगी आदित्यनाथ की जन केन्द्रित सरकार की प्रभावी योजनायें हैं। मतदाता प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने को उत्सुक हैं और भाजपा बस्ती मण्डल के तीनों सीटों पर भाजपा जीत का रेकार्ड बनायेगी।

भाजपा नेता रमाकान्त पाण्डेय ने कहा कि विपक्ष के वायदों पर जनता को भरोसा नहीं हैं जबकि पीएम मोदी की गारन्टी लोगों की जुबान पर है। शौचालय, आवास, ग्रामीण क्षेत्रों में विद्युतीकरण और बेहतर बिजली की आपूर्ति, पात्रों को निःशुल्क अनाज, हर घर को नल और जल योजनाओं ने मतदाताओं का भरोसा जीत लिया है। कहा कि विपक्षी आरक्षण और संविधान को लेकर मतदाताओं को बरगलाने की कोशिश भले करें किन्तु प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने स्पष्ट कर दिया है कि जब तक वे हैं संविधान और आरक्षण के साथ कोई खिलवाड़ नहीं होने पायेगा। बताया कि यह चुनाव नरेन्द्र मोदी और योगी आदित्यनाथ के विश्वास पर लड़ा जा रहा है। विजय सुनिश्चित है।

भाजपा नेता रमाकान्त पाण्डेय ने बस्ती के कप्तानगंज के अनेक गांव, सिद्धार्थनगर के बांसी, डुमरियागंज, इटवा, संतकबीर नगर के खलीलाबाद के साथ ही अनेक स्थानों पर मतदाताओं से सीधा सम्पर्क किया। प्रचार के दौरान उन्होने डुमरियागंज के प्रत्याशी जगदम्बिका पाल से शिष्टाचार भेंट भी किया। सम्पर्क के दौरान भाजपा नेता रमाकान्त पाण्डेय के साथ मुख्य रूप से शशिकान्त पाण्डेय, आदर्श शुक्ल, सुभाष चौधरी, विन्दू यादव, बब्बू शुक्ल, भूटाली वर्मा, राम बोध वर्मा, वीरेन्द्र वर्मा, राजमनि वर्मा, दीपक शर्मा, शिवपूजन यादव, बब्लू चौधरी, विशाल चौधरी, रामनरेश चौधरी के साथ ही अनेक लोग शामिल रहे।

तिरंगे में लिपटे जवान यशवंत ओझा का शव देख नम हुई आंखें

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

कलवारी, (बस्ती)। बदहवास मां की आंखें नम थीं, 85 वर्षीय पिता की पथराई आंखे बेटे के पार्थिव शरीर को देखे जा रही थीं, बेसुध पत्नी दहाड़े मारकर दौड़ी और पति के पार्थिव शरीर से लिपटकर फूट पड़ी। मासूम बेटे देवांश और प्रतीक पूछ रहे थे कि पापा को क्या हो गया? यह दृश्य ऐसा था जिसे देखकर वहां मौजूद हर शख्स भावुक हो गया और सभी की आंखें नम हो गई।

दरअसल बस्ती जिले के नगर थाना क्षेत्र अंतर्गत ऐलिया गांव में छुट्टी पर घर आये आर्मी जवान 38 वर्षीय यशवंत ओझा करेंट के चपेट में आने से घायल हो गये। स्वजन जिला अस्पताल लेकर गए जहां यशवंत ओझा को मृत घोषित कर दिया गया। पोस्टमार्टम के बाद सोमवार की सुबह जब जवान का शव गांव पहुंचा तो तिरंगे में लिपटे शव को देख हर किसी की आंखे भर आईं। पत्नी बेसुध हो गई और बच्चों की आंखों से आंसू थम नहीं रहे थे।

वहीं 85 वर्षीय बूढ़ा बाप एक कोने में बैठा पथराई आंखों से बेटे के पार्थिव शरीर को निहार रहा था और शायद यह सोच रहा था कि जिन कंधों पर खुद की अर्थी उठती उसी जवान बेटे की अर्थी को आज कंधा देना पड़ रहा। एक बाप का इससे बड़ा दुर्भाग्य और क्या हो सकता है। जो अपने जीते अपने जवान बेटे को कंधा दे। बूढ़ी मां की आंखों से आंसू रुकने का नाम नहीं ले रहे थे। जवान बेटे के शव से लिपट कर रो रही मां ने कैसे–कैसे सपने देखे थे कि उसका लाल उन सपनों को पूरा करेगा, लेकिन उसको यह नहीं मालूम था कि उसका लाल उसके लिए खुद एक सपना बनकर रह जाएगा। मां की पथराई आंखों में शायद अब आंसू भी सूख चुके थे।

जवान यशवंत ओझा के गांव ऐलिया पहुंचे गोरखा रेजिमेंट कूच्छाट गोरखपुर से सूबेदार मेजर धनीराम अधिकारी के नेतृत्व में सेना के जवानों की टीम नें राजकीय सम्मान के साथ गार्ड ऑफ ऑनर की सलामी देते हुए नम आंखों से अंतिम विदाई दी गई तो हर कोई फफक पड़ा। इस दौरान सेना के जवान नवीन सिंह, अनिल घले, प्रीतम सिंह, नीमा लिम्बु के साथ ही मुदुल कुमार, सूबेदार आरके मिश्र, फौजी पंकज सिंह आदि मौजूद रहे।

कलवारी थाना क्षेत्र के सरयू नदी माझा खुर्द घाट पर जवान यशवंत ओझा को अंतिम सलामी के बाद मुखाग्नि दी गई। मुखाग्नि के पहले मासूम बेटे व बेबस बूढ़े पिता ने जवान यशवंत को जब अंतिम सलामी दी तो सभी का गला रुंध सा गया, सभी आंखों में आंसू थे और हर कोई विधाता को कोस रहा था कि ईश्वर इस परिवार के साथ तूने ऐसा क्यूं किया। बूढ़े मां बाप अब किसके सहारे जिएंगे, मासूम बच्चों का क्या होगा और उस बेबस पत्नी का क्या होगा जिसके हर तरफ अब अंधेरा ही अंधेरा हो गया है। यह सब सोच हर कोई भावुक नजर आया।

भारतीय सेना में जवान रहे यशवंत ओझा के शोकाकुल स्वजन को सांत्वना देने क्षेत्र के बड़ी संख्या में लोग पहुंचे। अंतिम यात्रा में लोगों ने पुष्प की वर्षा किया। इस दौरान पूर्व फौजी व प्राथमिक शिक्षक संघ जिला महामंत्री बालकृष्ण ओझा, ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि शैलेन्द्र दूबे, समाजसेवी राजन पाण्डेय, संजीव पाण्डेय, प्रधान राजदेव, करुणेश मिश्र, अजय ओझा, विजय श्याम पाण्डेय, के साथ ही सैकड़ों की संख्या में स्थानीय लोग शामिल हुए।

भाजपा नेता स्कन्द श्रीवास्तव का दावा मण्डल के तीनों सीटों पर खिलेगा कमल

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। भारतीय जनता पार्टी के पूर्व जिलाध्यक्ष स्कन्द श्रीवास्तव ने पार्टी नेताओं, कार्यकर्ताओं के साथ बस्ती, सिद्धार्थनगर और संतकबीर नगर जनपद के लोकसभा क्षेत्रों के अनेक गांवों में सघन भ्रमण किया और मतदाताओं से नीति, कार्यक्रम के आधार पर भाजपा के पक्ष में आगामी 25 मई को मतदान का आग्रह किया।

भाजपा नेता स्कन्द श्रीवास्तव ने बस्ती लोकसभा क्षेत्र के नगर बाजार, हथिया भोयर, मटियरा, संतकबीर नगर जनपद के नाथनगर ब्लाक के धोबखरा, जैयराम पटटी, सतहरा, बरौली, लखनोहर, सिद्धार्थनगर जनपद के बांसी, बैदौली, मिठवल बाजार, नरकटहा आदि गांवों में सघन भ्रमण के दौरान मतदाताओं से कहा कि भाजपा के हाथ में ही देश का हित सुरक्षित है। वे विपक्ष के बहकावे में न आवे। आरक्षण और संविधान को समाप्त करने की अफवाह विपक्ष फैला रहा है। यदि भाजपा की ऐसी कोई मंशा होती तो पूर्ण बहुमत की सरकार में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इसका निर्णय ले लेते। उन्होने दावा किया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सरकार के कल्याणकारी नीतियों का लाभ पात्र व्यक्तियों तक पहुंचा है और निश्चित रूप से इस आधार पर भाजपा मण्डल के तीनों सीटों पर जीत दर्ज करेगी। बस्ती से सांसद हरीश द्विवेदी और डुमरियागंज से जगदम्बिका पाल जीत की हैट्रिक लगायेंगे। संतकबीर नगर से भी प्रवीण निषाद की जीत लगभग तय है। यहां कमल का खिलना तंय है।

सम्पर्क के दौरान भाजपा नेता स्कन्द श्रीवास्तव के साथ मुख्य रूप से शाश्वत प्रवीण, हरि नाम सिंह रंजन, चंद्रशेखर उपाध्याय, कन्हैया दूबे, इन्द्रनाथ दूबे, जगदम्बा प्रसाद श्रीवास्तव, नीतेश श्रीवास्तव, भोला गुप्ता, मो0 सत्तार, रामानन्द यादव, ओम प्रकाश धर द्विवेदी, राजेश श्रीवास्तव के साथ ही अनेक लोग लोग शामिल रहे।

"मुझे अखबार निकालने दो तो मै इस बात की परवाह नहीं करता कि कौन धर्म का नियामक है और कौन कानून का निर्माता"—वेडेल फिलिप्स

दैनिक
भारतीय बस्ती
बस्ती 21 मई 2024 मंगलवार

सम्पादकीय

फर्जी मतदान और तंत्र

भारतीय लोकतांत्रिक प्रक्रिया को पहले सुकुमार सेन और बाद में टीएन शेषन, जेएम लिंगदोह जैसे मुख्य चुनाव आयुक्तों ने मजबूती दी। स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव करवाने का सारा दारोमदार चुनाव आयोग पर ही है लेकिन ये चुनाव का दौर ऐसा है जब चुनाव आयोग आरोपों और विवादों के केंद्र में हैं। इन आरोपों में एक आरोप की सुनवाई सुप्रीम कोर्ट में चल रही है. विपक्ष लगातार कई मुद्दों को लेकर चुनाव आयोग की विश्वसनीयता पर सवाल उठा रहा है। आरोप लग रहे हैं कि चुनाव आयोग सत्तारूढ़ बीजेपी को लेकर बेहद नर्म है और विपक्ष को लेकर गर्म। चुनाव आयोग को न सिर्फ निष्पक्ष होना चाहिए, बल्कि निष्पक्ष दिखना भी चाहिए। विपक्ष सरकारी एजेंसियों का विपक्षी नेताओं के खिलाफ दुरुपयोग का आरोप पहले से लगाता आया है। ठीक चुनाव से पहले अरविंद केजरीवाल और हेमंत सोरेन की गिरफ्तारी को लेकर भी विपक्ष सरकार पर हमलावर रही है। सरकार ने चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति में सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश की भूमिका खत्म कर दी है जिस पर सवाल उठते रहे हैं हालांकि सरकार ने इस फैसले को सही ठहराया है। और अब जब चुनाव आयोग पर तीखे हमले हो रहे हैं, क्या आयोग की स्वतंत्र संगठन की छवि को नुकसान नहीं पहुंच रहा है? यूपी यूपी के फर्रुखाबाद में जिस प्रकार से फर्जी मतदान का मामला सामने आया है उसने तो व्यवस्था की पोल खोल कर रख दिया है। अच्छा हो कि चुनाव आयोग की निष्पक्षता बनी रहे।

यूपी के फर्रुखाबाद लोकसभा सीट पर एटा के अलीगंज विधानसभा क्षेत्र में फर्जी वोटिंग का वीडियो वायरल होने के बाद से खलबली मची है। चुनाव आयोग की सख्ती पर पूरी पोलिंग पार्टी सस्पेंड करने के साथ केस भी दर्ज करा दिया गया है। वायरल वीडियो में दिख रहे किशोर को भी गिरफ्तार किया जा चुका है। इस बीच जांच में कई खुलासे हो रहे हैं। जांच में पता चला कि इस बूथ पर 69. 22 प्रतिशत मतदान हुआ है। इसमें सिर्फ दस लोगों ने ही वोटर पहचान पत्र का इस्तेमाल किया है। ऐसे में कई तरह की आशंकाएं जताई जा रही हैं। चर्चा इस बात की भी हो रही है कि अगर किशोर ने वीडियो खुद बनाकर नहीं डाला होता तो इतने बड़े फर्जीवाड़े का पता कैसे चलता। विपक्षी पार्टियां भाजपा के साथ ही प्रशासन को कटघरे में खड़ा कर रहा है। फिलहाल आयोग ने यहां पर फिर से मतदान की तारीख का भी ऐलान कर दिया है। यहां 25 मई को दोबारा वोटिंग होगी।

फर्रुखाबाद लोकसभा सीट पर चौथे चरण में 13 मई को वोटिंग हुई थी। इसके एक हफ्ते बाद रविवार को यहां के अलीगंज विधानसभा क्षेत्र के बूथ खिरिया पवारान के बूथ का वीडियो तेजी से वायरल हुआ। इस वीडियो में एक किशोर बारी—बारी से बूथ के अंदर जाकर भाजपा प्रत्याशी को वोट डाल रहा है। इसके साथ ही मोबाइल फोन से वीडियो भी बना रहा है। वह जिस तरह से अपने वोटों को गिनकर बता रहा है, ऐसे लग रहा है किसी ने उसे इस तरह से फर्जी वोटिंग का टॉस्क दिया है।

वीडियो को समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर पोस्ट कर चुनाव आयोग और भाजपा को निशाने पर लिया। अखिलेश यादव की पोस्ट को कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने रिपोस्ट करते हुए अपनी सरकार बनने पर ऐसे लोगों पर कड़ी कार्रवाई की बात कही। इसके बाद पूरे प्रशासन में हड़कंप मच गया।

तत्काल जांच शुरू हुई और कुछ घंटे में ही बूथ पर तैनात पूरी पोलिंग पार्टी को सस्पेंड करने के साथ ही किशोर को गिरफ्तार कर लिया गया। पोलिंग पार्टी के खिलाफ भी केस दर्ज कर पुलिस ने भी जांच शुरू कर दी। जांच में पता चला कि वहां पर वोट देने वाले लोगों में सिर्फ 10 लोगों ने ही वोटर कार्ड का इस्तेमाल किया है। इससे यह भी माना जा रहा है कि बड़ी संख्या में फर्जी वोट यहां डाले गए हैं। अब 25 को पुनर्मतदान में पता चलेगा कि जिन दस लोगों ने वोटर कार्ड से वोट डाले उनके अलावा क्या किसी के पास वोटर कार्ड नहीं था। कई और बातें भी पता चल सकती हैं। जो भी हो प्रशासन के निष्पक्ष चुनाव का दावा तो तार—तार हुआ ही है।

खपरैल मकानों से कंक्रीट भवनो में गुम होता जीवन

—आत्माराम यादव—

खपरैल शब्द आते ही एक ऐसे कमरे—मकान का स्वरूप हमारे सामने आ जाता है जो हमारी मौलिक सांस्कृतिक धरोहर है जिसे देश के ग्रामों ओर शहरों से उजाड़ा जा रहा है ओर पर्यटन स्थलों पर हमारी मूल विरासत कि दुहाई देकर इन खपरैल मकानों को सहेजा जा रहा है। दो दशक पूर्व से बीती शताब्दियों का किस्सा सभी के जेहन में है जहा इन खपरा अर्थात खपरैल मकानो में आपका, मेरा जन्म हुआ, हमारा लालन पोषण, गोदी, झूला से घुटने चलाई, गिरकर खड़े होने जैसी यादों के साथ चिमनी, लालटेन, दीये के प्रकाश में पढ़ाई की शुरुआत सहित घर के बाहर आँगन ओर आँगन में तुलसीधारा की परिक्रमा से जुड़ा है। जो खपरैल मकानों के इर्द—गिर्द ही पला बड़ा हुआ है। खपरैल की मुडैर पर फंसी हमारी पतंग या गिल्ली डंडा खेलते समय गिल्ली मगरी पर गिरती थी तब वे जब तक नहीं निकलती थी जब घर में रोटी बनाती अम्मा, काकी, बुआ, मौसी, नानी की फटकार या बाहर बैठी दादी की प्यार भरी डपट "तुमाओं राम भलो करें सबई खपरा फौर दवे" मिल जाती थी।

देश के अनेक प्रदेशों में भाषा बोली की भिन्नता रही हो किन्तु सभी के खपरैल मकान में रोजमर्या के इस्तेमाल के लिए एक कमरे के कोने में चकिया, चूल्हे के पास पिंडी, सिकोली टिकोली, धान कूटने का मूसल शोभा बढ़ाते थे। बढ़ती आधुनिकता जीवन शैली में हम खपरैल के संरक्षण की बात भी नहीं कह सकते अब ये सभी सामग्री संग्रहालयों में संभाल कर रखने वाली होती जा रही है ओर ग्रामीण परिवेश ने अपनी मौलिकता को बदलकर शहरी परिवेश में ढाल लिया है जिससे अब पर्यावरण के साथ खेती के कम होने से कंक्रीट मकानों में आदमी गुम होने लगा है जिस हेतु जनजागृति आवश्यक है।

मानव जीवन के बौद्धिक स्तहर पर विकास के प्रादुर्भाव की सोच का मूलमंत्र झोपड़ी रही है ओर झोपड़ी में निश्चिंतता से अपनी संस्कृति ओर परम्पराओ को अपने पूर्ण स्वाभिमान को जीने वाले सीधे सादे वनवासी, ग्रामवासी ओर शहरी रहे है। गत कुछ वर्षों में देश—प्रदेश की सरकारें ने कच्चे मकानों, झोपड़ियों से मुक्त कर क्रांकिट के भवनो का सपना दिखाकर इन लोगों को इनकी मौलिकता ओर गर्व करने वाली संस्कृति से वंचित कर इनके मूल साधनों ओर संसाधनों को छीन चुकी है। सरकारों ने मिट्टी के बने कच्चे मकानों की दीवारों को तोड़कर पहले इन्हे इनकी मिट्टी से अलग किया जिसमें इनकी आत्मा का निवास था फिर झोपड़ी में रहने वालों को धूल, पानी अंधड़ तूफान का भय से घाँसफूस से बनी झोपड़ी उड़ जाने का डर बताकर आधुनिक मकान दिये। यही नहीं मिट्टी के बने देशी कबेलू के मकान ओर अंदर कमरों की देशी बनावट इनके सुख को हजारगुणा कर इन्हे पर्यावरण से सुरक्षा के कवच उपलब्धा कराती थी वही इनके उपलब्धा स्व साधन जहा ये अपने मकानों के आसपास प्राकृतिक हवा पानी की व्यवस्था हेतु नीम, पीपल, इमली आदि के पेड़ ये लोग अपने घरों ओर गाँव में लगाते थे से इन्हे वंचित कर इन पेड़ पोधों को कटवाकर प्रकृति से कोसों दूर कर कंक्रीट के भवनों में इन लोगों को गुम कर दिया है।

बड़े—बड़े पूंजीपति या सरकार आज भी अंग्रेजों के समय के अंगेजी खपरैल वाले मकानों में सरकारी ऑफिस बनाए है या उन्हे रेस्ट हाउस, सर्किट हाउस के रूप में साज सज्जा कर इस्तेमाल कर प्रकृति का पूरा आनंद उठा रहे है पर मजे की बात है जिन लोगों के मिट्टी के मकान ओर देशी खपरैल वाले मकानों पर इन्हे गौरव था वे ही इन अँग्रेजी मकानो में ठहरने की सोच भी नहीं सकते फिर यहा रहना उनके लिए सपना भर है। आज सरकार देश के हर गाँव, जंगल, शहर ओर महानगर में झुग्गी झोपड़ी ओर मकानो मे रहने वालो को गरीब मानकर उसे पक्का मकान बनाकर गरीबी से मुक्त कर रहे है जिसमें कई प्रदेशों में इन योजनाओं का नाम 'मुख्यमंत्री आवास ओर प्रधानमंत्री आवास' योजना का लाभ देकर यह साबित करना चाहते है की तुम कोई मामूली या आम आदमी नही हो प्रधानमंत्री आवास ओर मुख्यमंत्री आवास में रहने वाले हो, यानि तुम कोई प्रधानमंत्री ओर मुख्यमंत्री से कम नहीं हो ? गरीब पक्का कांक्रीट का भवन पाकर फूला नहीं समाता किन्तु जैसे ही उसमें रहना शुरू करता है तो पता चलता है की वह अन्य सरकारी योजनाओं से वंचित हो गया क्योकि वह अब एक छोटा सा कैदखानानुमा भवन निर्माण कराकर अमीर हो गया है।

भारत कृषि प्रधान देश रहा है, और अगर देश के पूंजीपतिओ की बुरी नीयत इन किसानों के ग्रामीण क्षेत्रों की कृषिभूमि पर पड़ी तो कुछ सालो ओर यह देश कृषि प्रधान रह सकेगा वरना शहरी क्षेत्रो के आसपास चारों सीमाओ में खरपतवार की तरह उगने वाली कांक्रीट की बहुमंजिला इमारतों का महाजाल बिछाकर इन पूंजीपतिओ द्वारा पैसा छापने की टकसाल लगाकर भूमियो को हथियाने का सिलसिला नही थमेगा। शहरी विकास प्राधिकरण, नजूल ओर लोकनिर्माण से लेकर नगरपालिकाए, एसडीएम आदि के कार्यालय सारे नियमो—कानूनों को ताक पर रखकर इन्हे अनापति प्रमाण पत्र जारी करने में दो घर आगे होते है। शहरी चमक—दमक में धन शक्ति से पूर्ण ग्रामीण परिवार शहर में स्थान बनाकर, शहरीकरणको विकसित कर ग्राम्य जीवन को उपेक्षित भाव रख गांवों से पलायन कर रहे हैं। उन्हें 'जन्मभूमि कर्मभूमि ग्राम्य जीवन में 'गंवारता' का बोध होने लगा है, यही कारण है कि शहर की कंक्रीट कालोनियों में इनका मन भा गया है और इन्हे गाँव के खपरैल मकानों से कोफ्त हो गई है तभी शहर कि संस्कृति में ये लोग अपने को आधुनिक समझने लगे है जो पर्यावरण संतुलन के लिए घातक है।

समझने वाली बात है कि सांस्कृतिक रूप से तो जीवन ओर मृत्यु हमारी लोक परम्पराओं, संस्कृति और भारतीय संस्कारों से ही जन्मता है, पलता है और बड़ा होकर भारतीय पहचान को स्थापित करता है। लोगों के रहने, पहनने, खाने—पीने सभी में लोक संस्कृति की पृथक—पृधक सभ्यता रही है, जो उनकी मौलिकता और सभ्य पहचान होती है। देश, भाषा, रूप, स्वरूप, संगीत, साहित्य, खानपान व जीवन की सभी प्राकृतिक एवं पर्यावरणीय सुविधाओं के साथ सद्भाव और सन्मार्ग से जोड़ने का सवाल अब इस बदलाव के बाद खड़ा होने लगा है जिसमे अपनी जमीन से अपनी मातृभूमि से पृथक होने वाली पीढ़ी इस अंधी दौड़ में संस्कारों को दमित करती जा रही है। यही कारण है कि पहले जहा खपरैल मकान को छने—छाबने कि बात होती थी तब ग्राम के बड़े व्यक्ति भी सिद्धस्थ होने पर मदद के रूप में दिन भर यह काम करते थे ताकि बरसात में इनके काम किए मकान कि मगरी से लेकर नीचे तक कोई पानी का टपका शेष नही रहता था किन्तु अब हमने ऐसे हालात निर्मित कर लिए है जिसके समक्ष मानवीय मूल्य अर्थहीन हो गए है और व्यक्ति का आपसी प्रेम व अपनापन निजी स्वार्थ कि बलि चढ़ गया है तभी बिना मूल्य लिए कोई मदद के लिए आगे नहीं आता है।

पर्यावरण के लिए असंतुलन कि बात के परिणाम कोई देखना नहीं चाहता है हा बतौर सजा के भुगत रहा है और उसे अपनी मौज मान ली है। जिन्हे कबेलुनुमा कच्चे खपरैल मकानों, टीन की चादरों से घर में आग उगलते आवासों व झोपड़ियों से मुक्त कर देश में सरकारें आम नागरिकों को झुग्गी झोपड़ी ओर खपरैल मकानों से वंचित कर उनके सपने छीन रही है, वही सरकारे पैसा कमाने के लिए, बड़े पूंजीपतिओ को आकर्षित करने के लिए जंगलो में, नदियों किनारे, आदि पर्यटनस्थलो पर प्रकृति कि गोद में पूर्ण हँसती खेलती पवन के अठखेलियों का आनंद लेने के लिए वही खपरैल मकान में चाँदनी रात में ठहरने का लोभ देती है ओर खपरैल मकानों से कमाई कर लोगों के जीवन को सुहाना बनाने कि प्रतिस्पर्धा करती है, अगर सरकार इनकी जगह किसी गाँव में इन खपरैल मकानों में ग्रामीणो के साथ पेइंगगेस्ट के रूप मे योजनाए लाती तो अनेक गाँव जी उठते, अनेक ग्रामीण अपने खपरैल मकानों के सुख को देश दुनिया के बड़े लोगो से सांझा कर रोजगार के पर्याप्त अवसर भी प्राप्त कर सकते थे ओर अपने खपरैल मकानो को सुरक्षित ओर संरक्षित रख सकते थे, पर क्या कीजिएगा वे बेरोजगार है ओर पूंजीपति के रोजगार में इजाफा हुआ है।

यही कारण है ग्रामों से मजदूरी रोजगार पाने के लिए शहरों कि ओर पलायन थमने का नाम नही ले रहा है। हर शहर में कोई जयस्तम्भ, कोई चौक, कोई पुलिया, कोई बाजार अवश्य मिल जाएगा जहा ग्रामीण ही नही अपितु शहरी मजदूर काम के तलाश में सुबह घर से निकलता है ओर उस मजदूर मंडी में अपने को साबित करना होता है वरना लोग इतने चतुर चालक है जो युवा मजदूरों को पहले चुनते है ताकि उनकी ताकत का पूरा शोषण दुगुना काम कराकर प्राप्त कर ले। अधेड़ बूढ़े मजदूरों को काम के लिए गिड़गिड़ाना पड़ता है, आखिर मुख्यमंत्री दृप्रधानमंत्री आवास मे रहने की कुछ तो कीमत चुकानी होगी। यही मुख्यमंत्री प्रधानमंत्री आवास में रहने वाले मजदूर हर गाँव,शहर महानगरों में एक से एक अत्याधुनिक भवनों के विकसित स्वरूप गगन चूमते अट्टालिकाओं एवं आधुनिक शैली के फाइबर के भवन मनुष्य की सुविधाओं के लिये निर्माण करते आ रहे है। मिट्टी से चूना, चूना से सीमेंट, सीमेंट से कंक्रीट और अब लोहा सीमेंट से 50 मंजिला भवन हमारे विकासशील होने के प्रमाण दे रहे हैं। देखा जाये तो सुनहरे भविष्य की मान्यताओं में यह सुविधा आवश्यक भी मानी जाती है, परन्तु आधुनिक संरचनाओं ने हमारे तन—मन—धन को गिरवी रख लिया है और हम पाश्चात्य सभ्यता के ऋणी हो गए हैं। जिसका भुगतान हमें ही नहीं आने वाली पीढ़ी को भी चक्रवर्ती ब्याज के साथ चुकाने को तैयार रहना चाहिए।

लाहौर की 'हीरा मंडी' और भंसाली

—फकीर ऐजाजुद्दीन—

नरेंद्र मोदी और संजय लीला भंसाली में कुछ समानता है। वे दोनों पाकिस्तान को विकृत चश्मे से देखते हैं। पाकिस्तान के बारे में मोदी की धारणा एक ऐसे पड़ोसी देश की है, जिस पर आतंकवादियों ने कब्जा कर लिया है, जो हमले के लिए भारतीय स्थानों की तलाश में हैं। भंसाली शानदार झूठ रचने के लिए अपने कैमरे के लैंस का उपयोग करता है। उनकी नवीनतम लाहौर के रैड—लाइट एरिया, जिसे हीरा मंडी के नाम से जाना जाता है, पर 8 भाग की नैटफ्लिक्स शृंखला है। (संयोग से, इसका नाम महाराजा रणजीत सिंह के पसंदीदा राजा हीरा सिंह के नाम पर पड़ा।)

भंसाली एक अदम्य प्रतिभाशाली फिल्म निर्माता, लेखक और संगीतकार—अपने आलोचकों के निशाने पर हैं। उन्होंने शेक्सपियर के रोमांस रोमियो और जूलियट के पवित्र रूपांतरण जैसी फिल्मों के साथ उन्हें चुनौती दी है इसे 'रामलीला' शीर्षक दिया। इसने कुछ रूढिघ्वादी रामभक्तों को क्रोधित कर दिया। उन्हें इसका नाम बदलकर 'गोलियों की रासलीला राम—लीला' करने के लिए मजबूर होना पड़ा। उनके विरोधियों ने उन्हें पहले दिल्ली उच्च न्यायालय और फिर इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ पीठ की शरण में जाने के लिए मजबूर किया, जिसने फिल्म की रिलीज के एक हफ्ते बाद उत्तर प्रदेश में फिल्म के प्रदर्शन पर प्रतिबंध लगा दिया। इन बाधाओं के बावजूद, 'गोलियों की रासलीला राम—लीला' की पांचवीं सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्म बन गई।

भंसाली की अगली परियोजना 'बाजीराव मस्तानी' (2015) में मराठा नायक पेशवा बाजीराव प्रथम और उनकी दूसरी पत्नी मस्तानी के बीच प्रेम का गुणगान किया गया। बाजीराव और मस्तानी के वंशजों ने यह दावा करते हुए उस फिल्म को अस्वीकार कर दिया कि भंसाली द्वारा अत्यधिक रचनात्मक स्वतंत्रता के कारण उनके पूर्वजों का गलत चित्रण हुआ।' जब स्थगन के लिए बाम्बे उच्च न्यायालय से संपर्क किया गया तो चतुराई से इंकार कर दिया गया। एक बार फिर, भंसाली ने अपने आलोचकों को जवाब दिया जब यह फिल्म अब तक की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली भारतीय फिल्मों में से एक बन गई। भंसाली की 'पद्मावत' (2018) ने 13वीं सदी के मेवाड़ के राजपूत शासक रावल रतन सिंह और दिल्ली सल्तनत के शासक अलाउद्दीन खिलजी को गुमनामी से बाहर निकाला। दोनों में खूबसूरत रानी पद्मिनी (उर्फ पद्मावत) के लिए प्रतिस्पर्धा थी। एक उग्र समापन में, भंसाली ने पद्मिनी को सामूहिक जौहर (आत्मदाह) करने के लिए चित्तौडगढ़ किले के भीतर फंसी राजपूत महिलाओं की एक भीड़ का नेतृत्व करने के लिए कहा।

उपद्रवियों ने चिंता शांत होने या भंसाली द्वारा अपनी फिल्म पूरी करने का इंतजार नहीं किया। 2017 में जयपुर में इसकी शूटिंग के दौरान, श्री राजपूत करणी सेना के दिग्गजों ने भंसाली, उनकी टीम के साथ मारपीट की और सैट को नुकसान पहुंचाया। बाद में, दूसरे समूह ने एक स्टूडियो और उस दौर की महंगी पोशाकें जला दीं। जब 'पद्मावत' साल की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्म बन गई तो भंसाली ने बदला लिया।

भंसाली का नवीनतम प्रोडक्शन 'हीरामंडी रू द डायमंड बाजार' उनके निजी दिमाग की उपज है। उन्होंने 14 वर्षों तक इस विचार को प्रस्तुत किया, फिर इसका निर्देशन किया, पटकथा का सह—लेखन किया, इसका संगीत तैयार किया और टैलीविजन के लिए एक लघु—शृंखला के रूप में इसका निर्माण किया। कहानी 1940 के दशक के अंत में लाहौर की हीरा मंडी पर आधारित है। यह तवायफों या नर्तकियों की कठिनाइयों से संबंधित है क्योंकि वे पहले सामाजिक स्वीकृति और फिर राजनीतिक स्वीकृति के लिए संघर्ष करती हैं। देर से देशभक्ति के विस्फोट में, वे लाहौर की सड़कों पर मार्च करती हैं, उनके घुंघरू सीढ़ियों पर झंकारते हैं, और अपने पूर्व ब्रिटिश ग्राहकों से आजादी की मांग करते हैं। जाहिर तौर पर, भंसाली चाहते थे कि फिल्म में पाकिस्तानी कलाकार अभिनय करें। राजनीति में हस्तक्षेप किया। ऐसा नहीं है कि पाकिस्तानी अभिनेता भंसाली के आलोचकों द्वारा लगाए गए पहले आरोप के खिलाफ ढाल प्रदान कर सकते थे। इसकी ऐतिहासिक प्रामाणिकता की कमी थी।

कई लाहौरी और वे बाहरी लोग जो इसे पसंद करते हैं, भंसाली की हीरा मंडी की सामाजिक स्थलाकृति को नहीं पहचानेंगे। उनके बहुभाषी कलाकार अपने उर्दू संवादों को तो अच्छी तरह दोहराते हैं लेकिन उचित उच्चारण की बारीकियों को नजरअंदाज कर देते हैं। उनकी अनेक नायिकाएं भव्य रूप से सजी—धजी रहती हैं। उनके मांसल पुरुष अभिनेता अक्सर कपड़े उतारते थोब और केवल निचले स्तर के लोग—नौकरानियां और एक सिख प्रेमी—प्रेमिका—पंजाबी बोलते हैं। उनके नर्तक चकरदार दरवेशों की तरह घूमते हैं, जो पहले के मुस्लिम सामाजिक नाटकों, विशेष रूप से 'मुगल—ए—आजम' और 'पाकीजा' में अपनी बड़ी बहनों की नकल करते हैं। उनके लोग अनावश्यक रूप से रोएंदार टोपी पहनते हैं जिसे एक बार दिवंगत अभिनेताध्तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम.जी. रामाचंद्रन ने लोकप्रिय बना दिया था।

इन वर्षों में, लाहौर की हीरा मंडी, अपने निवासियों की तरह अपना आकर्षण खोने लगी। व्यापार लाहौर के पुराने शहर से नए स्थानों पर स्थानांतरित हो गया जिससे लाहौर की फूड स्ट्रीट को रास्ता मिल गया। जो कोठे कभी घुंघरुओं की आवाज से गूंजते थे वहां अब महंगे रेस्तरां हैं। 1970 के दशक के बाद लंदन के सोहो में भी इसी तरह का बदलाव आया। कुछ पाठकों को याद होगा कि 1959 में, यू.के. ने सड़क अपराध अधिनियम लागू किया था। इसने सार्वजनिक स्थान पर घूमना—फिरना अपराध बना दिया। इसका उद्देश्य ब्रिटिश शहरों को आयातित सड़क पर चलने वालों से साफ करना था। हास्य अभिनेता पीटर उस्तीनोव ने इसकी उपयोगिता पर सवाल उठाते हुए सुझाव दिया कि सड़कों की सफाई करना भोजन के बाद मेज को साफ करने जैसा है 'किसी को क्रॉकरी कहीं रखनी होगी' पिछले कुछ वर्षों में, लाहौर की हीरा मंडी से क्रॉकरी समृद्ध वातावरण में स्थानांतरित हो गई है। यदि वह हीरा मंडी अस्तित्व में है, तो यह भंसाली के टैक्नीकलर दिमाग के एक काल्पनिक रैड लाइट उपनगर के रूप में है।

साहित्य जीवन की श्रेष्ठता का उचित माध्यम

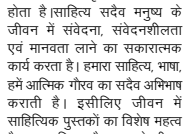

—संजीव ठाकुर—

साहित्य अध्ययन, उन्नयन मनुष्य के जीवन में उत्कृष्टता का आधार होता है।साहित्य सदैव मनुष्य के जीवन में संवेदना, संवेदनशीलता एवं मानवता लाने का सकारात्मक कार्य करता है। हमारा साहित्य, भाषा, हमें आत्मिक गौरव का सदैव अभिभाव कराती है। इसीलिए जीवन में साहित्यिक पुस्तकों का विशेष महत्व है। सतसाहित्य और भाषा से जीवन गरिमा और गहरी संवेदना लिए हुए होता है। वस्तुत अच्छा साहित्य का वाचक, एक प्रशासक, एक अच्छा अभिनेता और एक अच्छा राजनेता बन सकता है। पर दूसरी तरफ एक अच्छा राजनेता, अच्छा प्रशासक, अच्छा अभिनेता बिना भाषा ज्ञान और साहित्यिक मनन के अच्छा साहित्यकार या उत्कृष्ट मानव नहीं हो सकता है। इसके लिए मनुष्य के जीवन में साहित्य के अध्ययन, मनन और चिंतन की आवश्यकता होती है। क्योंकि साहित्य में मानवीय समाज के सुख—दुख, आशा निराशा,उत्थान और पतन का स्पष्ट परिवेश स्वमेव उपस्थित रहता है। साहित्य की इन्हीं सब खूबियों के कारण उसे समाज का प्रतिबिंब कहा जाता है। साहित्य सर्वमान रूप से एक स्वायत्त आत्मा ही है, और साहित्य का रचयिता खुद स्वयं यह नहीं बता सकता कि साहित्य किसके जीवन में कब और क्या क्या परिवर्तन ला सकता है। मूलतःसाहित्य सत्य के अन्वेषण की साधान और सौंदर्य की अभिव्यंजना भी है। विशुद्ध जीवन एवं उच्च सत साहित्य मानव और समाज की संवेदना और उसकी सहज व्यक्तियों को युगों तक आने वाली पीढ़ियों में संचारित करता रहता है।और यही वजह है कि शेक्सपियर, तुलसीदास की कृतियां आज भी लोगों के हृदय में राज करती है। वैश्विक स्तर पर मनुष्य कितने ही जाति, राजनीति और भौगोलिक तौर पर अनेक गुटों में बट जाए, पर साहित्यिक धरातल एवं परिसीमा में सब एक हैं,सभी का बराबरी का दर्जा है। साहित्य मनुष्य को मानव और एक सहृदय व्यक्ति बनाना सिखाता है। दुनिया के सभी इंसान एक है,उनकी प्रवृतियां भी एक जैसी ही है। साहित्य सभी मानव में संवेदना भरकर करुणा, दया तथा परस्पर स्नेह के भाव पैदा करता है। साहित्य समय की धारा से अछूता नहीं रह सकता है। साहित्यकार उस समय काल की धारा में बैठकर उस समय की पीड़ा, संत्रास और उत्पीड़न को लेकर अपनी रचनाएं करता है, और समाज को एक परिष्कृत वातावरण बनाने के लिए प्रेरित करता है। जिस समाज में साहित्यिक परंपरा विशाल एवं समृद्ध है,वह समाज हमेशा से जीवंत और प्रगतिशील माना गया है। सत साहित्य सदैव मानवी सहज प्रवृत्तियों के साथ समय की धारा के साथ परिवर्तित एवं परिमार्जित होता रहा है। और यही कारण है कि एक अच्छा साहित्यकार एक अच्छा मनुष्य माना जाता है। और उसकी कृति युगों युगों तक जनमानस को प्रेरित, उत्प्रेरित तथा उत्साहित करती रहती है। साहित्य भविष्य की रूपरेखा वर्तमान को सामने रखकर सुनिश्चित करते हुए मानव के सोए हुए विवेक शक्ति को जागृत करने का प्रयास करता है। और श्रेष्ठतम साहित्य में मनुष्य के भीतर तथा बाहर के सार्वभौमिक मूल्यों,संदेशों और उद्देश्य को अंतर्निहित किए रहता है। यही कारण है की कबीरदास, रविंद्र नाथ टैगोर, जयशंकर प्रसाद, प्रेमचंद, शेक्सपियर, होमर,मिल्टन मानवीय चेतना के चितेरे साहित्यकार माने गए और उन्हें युगों युगों तक याद किया जाता रहेगा। वास्तव में जीवन साहित्य का आधार है, चाहे वह व्यक्ति विशेष का हो, परिवार का हो, समाज का हो, राज्य का हो या राष्ट्र का हो या संपूर्ण विश्व का जीवन के बिना साहित्य की कल्पना ही असंभव और साहित्य की समृद्धि बिना जीवंत समाज का सम्यक विकास असंभव है।

पूरी दुनिया मोदी को ओर आशा भरी नजरों से देख रही –अनुप्रिया

संवाददाता–बलरामपुर। एडीए सरकार ने 2047 तक देश को विकसित बनाने का संकल्प लिया है। गठबंधन का यह सपना जरूर साकार होगा। मोदी सरकार के समय में देश की बढ़ती अर्थ व्यवस्था पर विश्व चकित है। आज दुनिया के देश भारत की ओर आशा भरी नजरों से देख रहे हैं। यह कमाल किसी और का नहीं बल्कि देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का है। मोदी सरकार ने देश में विकास के माध्यम से सामाजिक न्याय की अवधारणा को सच साबित करके दिखाया है। बदलते भारत ने दुनिया के नए युग में प्रवेश किया है। एडीए गठबंधन ने ऊंच नीच का भेदभाव समाज से खत्म किया है। यह बातें अनपा दल एस की राष्ट्रीय अध्यक्ष केन्द्रीय राज्यमंत्री एनडीए गठबंधन में शामिल अनुप्रिया पटेल ने पचपेड़वा के रतनपुर चिंवटिहिया गांव में कही। वह यहां सोमवार को लोकसभा प्रत्याशी साकेत मिश्र व गैसड़ी विधानसभा प्रत्याशी शैलू सिंह के समर्थन में कही। अनुप्रिया बोलीं कि एनडीए गठबंधन ने देशहित में तमाम कार्य किए हैं। देश के करोड़ों गरीबों को राशन, आवास, औषधि व सरकारी योजनाओं का लाभ दिया गया है। पीएम मोदी चाहते हैं कि लोकतंत्र में सामाजिक न्याय की अवधारणा को साकार करें। इसके लिए लोगों को गरीबी रेखा से ऊपर उठाने का काम एनडीए गठबंधन ने किया है। गठबंधन ने 2014 व 2019 में मोदी को पीएम बनाया है। 2024 में रिकार्ड मतों से जीतने के लिए गठबंधन तैयार है। 400 पार का नारा निरर्थक नहीं जाएगा। जब कोई सच्चा व्यक्ति अपनी जुबान से कुछ कहता है तो उसकी वाणी मिथ्या नहीं जाती है। देश में एनडीए की लहर है। तमाम प्रदेशों में मोदी को प्रधानमंत्री बनाने का होड़ लगी है। आम जन मोदी के सिर पर ताज देखना चाहता है। साकेत मिश्रा व शैलू जीतेंगे तो भाजपा देश में मजबूत होगी। एक–एक वोट देश की बुनियाद को मजबूत करेगा। बहुरूपियों के बहकावे में ना आएं। तमाम दल देश को बर्बाद करने पर तुले हैं। लोकतंत्र में वोट की शक्ति से बढ़कर कुछ नहीं। जनता मोदी को प्रधानमंत्री बनाने का लक्ष्य तय कर चुकी है। सरकार ने पिछड़ों का हक छीना है। राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग को संवैधानिक अधिकार नहीं दिया। पीएम मोदी के सामने यह बात आई तो उन्होंने इसे सहर्ष स्वीकार्य कर लिया। एनडीएम व भाजपा ने भय, भूख व भ्रष्टाचार को देश से खत्म किया है। भ्रष्टाचारियों पर वैज्ञानिक तरीके अपनाकर लगाम कसी है। कांग्रेस ने अपने समय से देश को लूट लिया है। भाजपा ने जब उस लूट को बंद किया तो कांग्रेसी सड़क पर आ गए। अब वे मोदी की बुराई कर रहे हैं। अपना देश नए युग में प्रवेश कर रहा है। देश की तरक्की रोकने वालों को देशद्रोही कहना गलत नहीं होगा। भाजपा व एनडीए गठबंधन गरीबों के हितार्थ काम कर रही है। गठबंधन के दलों ने कभी गरीबों के हित से खिलवाड़ नहीं किया। बल्कि उनकी लड़ाई लड़ी है। 51 करोड़ भारतीय ऐसे हैं, जिनके खाते में प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि की राशि बिना मांगे पहुंच जाती है। यदि भारतीयों को अपने सम्मान की रक्षा करनी है तो उन्हें तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाना होगा।

अनुप्रिया बोलीं कि यूपीए

इस अवसर पर लोकसभा प्रत्याशी साकेत मिश्र, गैसड़ी विधानसभा प्रत्याशी शैलेश कुमार सिंह शैलू, भाजपा जिलाध्यक्ष प्रदीप सिंह, सदर विधायक पल्टूराम, तुलसीपुर के कैलाश नाथ शुक्ला, भाजपा जिला पंचायत अध्यक्षा आरती तिवारी, ब्लाक प्रमुख मनोज तिवारी, शक्ति सिंह, तुलसीपुर ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि प्रवीन कुमार सिंह विक्की, शिव कुमार पटेल आदि मौजूद थे।

घुघुली इलाके में हुई बारिश, गर्मी से मिली राहत

संवाददाता–महराजगंज। जिले में सोमवार की सुबह आंधी पानी से मौसम का मिजाज बदल गया। सुबह छाए बादल गरज चमक के साथ खूब बरसे। पानी बरसने से जहां गर्मी से राहत मिली। वहीं तेज आंधी की वजह से आम और लीची की फसलों का नुकसान हुआ। सब्जी की फसल पर भी असर पड़ा।

घुघुली संवाद के अनुसार सुबह ही आसमान में बादल छा गए। इसके बाद तेज बारिश होने लगी। किसानों का कहना है कि पंपिंग सेट चलाकर खेतों की सिंचाई नहीं करनी पड़ेगी। गन्ने की फसल को भी फायदा पहुंचेगा।

क्षेत्र में सब्जी और गन्ने की खेती के बहुल इलाके बिराईचा, टेढ़वा, कोटवा, विश्वनाथपुर, भरवलिया, पोखरभिंडा, बसन्तपुर, परसौनी बुजुर्ग, अमोढ़ा, बिशुनपुर गबडुआ, पकडियार बिशुनपुर, मेदिनीपुर, आदि गांवों के किसानों को राहत मिली। किसान सियाराम दास, मोहन सिंह, सेठई साहनी, सुग्रीम साहनी, अजय सिंह, सिदार्थ सिंह, चतुर्भुजा सिंह, श्याम बदन यादव, रामवृक्ष यादव आदि ने बताया कि पानी बरसने से काफी राहत मिली है।

कहासुनी में बुजुर्ग की रॉड से पीटकर हत्या

संवाददाता–महराजगंज। निचलौल थानाक्षेत्र के ग्राम बैठवलिया में युवक ने रविवार की रात में कहासुनी के बाद गांव के एक बुजुर्ग की रॉड से पीटकर हत्या कर दी। आरोपी ने अपनी पत्नी को पीटकर घायल कर दिया। सूचना के बाद पहुंची पुलिस कार्रवाई में जुटी है। घायल महिला को इलाज के लिए निचलौल सीएचसी में भर्ती कराया। ग्राम बैठवलिया निवासी विट्ठल (60) गांव के बाहर निर्माणाधीन खेल के मैदान की रखवाली करता था। रात में भी वह खेल मैदान में था। इस बीच वह गांव के एक व्यक्ति के घर चला गया, जहां एक युवक से उसकी कहासुनी हो गई। इस बीच विट्ठल की पत्नी सुभावती भी अपनी नातिन को साथ पति का भोजन लेकर वहां आ गई। इसी बीच कहासुनी होने पर आरोपी ने विट्ठल पर रॉड से हमला कर दिया, जिससे उसकी मौत हो गई।

आरोपी ने बीचबचाव करने आई अपनी पत्नी को भी घायल कर दिया। घटना की सूचना पर पहुंची पुलिस घायल महिला को अस्पताल ले गई। सोमवार की सुबह एसपी सोमेंद्र मीना ने घटनास्थल का निरीक्षण किया। उन्होंने इस मामले में त्वरित कार्रवाई करते हुए आरोपी को जल्द गिरफ्तार करने का निर्देश दिया। अनुज कुमार सिंह, सीओ ने कहा कि निचलौल थानाक्षेत्र के ग्राम बैठवलिया में एक बुजुर्ग की एक युवक ने हत्या कर दी। उसने अपनी पत्नी को पीटकर घायल कर दिया। आरोपी नशे का आदी है। उसकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस टीम सक्रिय कर दी गई है।

तेंदुए के हमले में मासूम सहित तीन घायल

संवाददाता–बलरामपुर। स्थानीय थाना क्षेत्र अन्तर्गत जगदीशपुर रामपुरडीह गांव में सोमवार सुबह साढ़े छह बजे बालक समेत तीन लोग तेंदुए के हमले में घायल हुए हैं। शौच करने गए युवक व बालक पर तेंदुए के हमला करने पर ग्रामीणों ने खदेड़ा तो वह गन्ना खेत में छिप गया। उप प्रभागीय वनाधिकारी की मौजूदगी में गन्ना खेत में हाका लगाने पर तेंदुआ हमलावर हो गया। उसने उप प्रभागीय वनाधिकारी के साथ मौजूद युवक को हमला कर घायल किया है। वन विभाग टीम की मौजूदगी में हुए तेंदुए के हमले से ग्रामीण दहशत जदा हो गए और उनके बीच अफरा तफरी मच गई। घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र तुलसीपुर में भर्ती कराया गया है। वहीं तेंदुए पकड़ने के लिए गांव में पिंजरा लगाया गया है। जगदीशपुर रामपुरडीह निवासी आठ वर्षीय मनोज कनौजिया पुत्र राजेन्द्र व 28 वर्षीय मनीष पुत्र छोटककू सुबह साढ़े छह बजे गांव के उत्तर शौच के लिए गए थे। अचानक गन्ना खेत में छिपे तेंदुए ने मनोज व मनीष पर हमला कर दिया। तेंदुए का पंजा लगने से दोनों बुरी तरह जख्मी हो गए। उनके शोर मचाने पर आसपास खेतों में शौच करने गए ग्रामीण दौड़ पड़े। ग्रामीणों को आता देख तेंदुआ गन्ना खेत में छिप गया। इस बात की जानकारी सोहेलवा वन्यजीव क्षेत्र के उप प्रभागीय वनाधिकारी मनोज कुमार को दी गई। वह टीम के साथ जगदीशपुर पहुंचे तो वहां ग्रामीणों ने गन्ना खेत को घेर रखा था। लोगों ने उन्हें जानकारी दी कि तेंदुआ इसी गन्ना खेत में छिपा है। उप प्रभागीय वनाधिकारी अपनी टीम व ग्रामीण हरिचरन, राजू भारती, पवन कुमार मौर्य आदि के साथ गन्ना खेत में घुस गए। तेंदुआ खेत में ही मौजूद था। अपने बचाव में वह हमलावर हो गया। उसने 30 वर्षीय राजू भारती को पंजा मार घायल कर दिया। तेंदुए को हमलावर होता देख ग्रामीण दहशत में आ गए। उनके बीच भगदड़ मच गई। वे भागकर अपने गांव पहुंच गए। तेंदुआ कुलाचे भरता हुआ भाग निकला। घायल मनोज, मनीष व राजू को इलाज के लिए तुलसीपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र ले जाया गया। प्राथमिक उपचार के बाद उन्हें घर भेजने की बात कही जा रही है।

घटना से आक्रोशित ग्रामीणों ने वन विभाग पर नाराजगी प्रकट की। कहा कि तेंदुआ क्षेत्र में लगातार हमले कर रहा है। हमले में अब तक चार व्यक्ति घायल हो चुके हैं। आधा दर्जन निराश्रित मवेशियों को तेंदुआ अपना शिकार बना चुका है। वन विभाग टीम हाथ पर हाथ धरे बैठी है। ग्रामीण काफी दिनों से गांव में पिंजरा लगाने की मांग कर रहे हैं, लेकिन उनकी बात नहीं सुनी जा रही है। वनाधिकारी ग्रामीणों की मांग पर दबाव में आ गए। उन्होंने वन विभाग टीम को जागरूकता अभियान चलाने के लिए आस–पास गांव में भेज दिया। ग्रामीणों से कहा गया कि वे खेत में अकेले न जाएं। बच्चों की सुरक्षा करें। अंधेरा होने पर उन्हें घर से बाहर न निकलने दें। उप प्रभागीय वनाधिकारी मनोज कुमार ने पिंजरा मंगवाकर तुरंत गांव में लगवा दिया। ग्रामीणों के गुस्से को देखते हुए उसमें बकरा भी बंधवाया गया है। उन्होंने बताया कि तेंदुआ नरभक्षी नहीं है। उसे पकड़ने के लिए पिंजरा लगवा दिया गया है। तेंदुए की निगरानी के लिए कई ट्रैपिंग कैमरे लगवाए गए हैं।

सुबह आई तेज आंधी में गिरा पेड़, दबकर बच्चे की मौत

संवाददाता–कुशीनगर। जिले सोमवार को सुबह बारिश से पहले कुबेरस्थान इलाके में आई तेज आंधी में पेड़ गिर गया। उसके नीचे दबकर एक 12 साल के बच्चे की मौत हो गई। मौके पर पहुंची कुबेर स्थान पुलिस ने शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। सोमवार को सुबह सात बजे कुबेर स्थान थाना क्षेत्र के लक्ष्मीपुर गांव निवासी राहुल 12 पुत्र स्व हरेंद्र कुशवाहा घर से खेलने के लिए गया था। इसी बीच अचानक आकाश में घटा छा गई और तेज आंधी के साथ बरसात चालू हो गई। उससे बचने के लिए वहछर के लिए भागा कि रास्ते में उसके ऊपर पेड़ गिर गया जिसमें वह दब कर घायल हो गया। परिजन इलाज हेतु जिला अस्पताल ले गए जहां डाक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। उधर माता गायत्री देवी का रो–रोकर बुरा हाल है। वह दो भाइयों में छोटा था। पिता की मृत्यु पहले हो चुकी है। मौके पर पहुंचे तहसीलदार पडरौना और राजस्वकर्मी ने मदद दिलवाने का आश्वासन दिया। परिवार की स्थिति बहुत दयनीय है।

वोट देने के बाद बोले बीजेपी सांसद बृजभूषण शरण सिंह- दोगुना वोटों से जीतेंगे

संवाददाता–बहराइच। लोकसभा चुनाव 2024 के पांचवें चरण का मतदान जारी है। भाजपा सांसद और पूर्व डब्ल्यूएफआई प्रमुख बृजभूषण शरण सिंह ने अपने बेटे और यूपी के कैसरगंज से भाजपा के लोकसभा उम्मीदवार करण भूषण सिंह की जीत पर विश्वास जताया। कैसरगंज में बीजेपी सांसद बृजभूषण सिंह ने कहा कि कैसरगंज की जनता उन्हें पिछली बार से दोगुने वोटों से जिता रही है। इस बार उनके बेटे करण सिंह बीजेपी प्रत्याशी के तौर पर कैसरगंज से चुनाव लड़ रहे हैं। उन्होंने कैसरगंज में वोट डालने के बाद कहा कि करण भूषण को किसी भी चुनौती का सामना नहीं करना पड़ेगा क्योंकि उन्होंने लोगों के लिए जो काम किया है और जो रिश्ते बनाए हैं उससे उनके बेटे को फायदा होगा। उन्होंने कहा कि करण भूषण सिंह ने अच्छी शिक्षा प्राप्त की है और वह काफी मैच्योर हैं। बीजेपी ने उन्हें उम्मीदवार बनाया है और हम इस

फैसले को लेकर आश्वस्त हैं। छह बार सांसद रह चुके हैं। करण भूषण सिंह को किसी चुनौती का सामना नहीं करना पड़ेगा। जो माहौल बनता है वह एक दिन में नहीं बनता है और पिछले पांच वर्षों में हमने जो प्रयास किए हैं और जो रिश्ते बनाए रखे हैं, उससे उन्हें लाभ होगा। बता दें कि कैसरगंज से बीजेपी सांसद बृजभूषण शरण सिंह महिला पहलवानों के लगाए गए आरोपों के कारण विवादों से घिर गए थे। बीजेपी सांसद बृजभूषण शरण सिंह का टिकट कटने के बाद बीजेपी ने यहां से उनके बेटे करण भूषण शरण सिंह को उम्मीदवार बनाया है। अपने बेटे के पक्ष में वोटिंग के लिए पहुंचे बीजेपी सांसद ने बेटे की जीत का दावा किया और कहा कि वो हमसे भी ज्यादा अच्छा काम करेंगे। उन्होंने कहा कि आरोपों के कारण ही कैसरगंज से और भी ज्यादा वोट पड़ेंगे। वहीं इस सीट पर सपा ने भगत राम और बसपा ने नरेंद्र पांडे को प्रत्याशी बनाया है।

ग्राम प्रधान पर लगाया गोशाला का सामान उठा ले जाने का आरोप

संवाददाता–श्रावस्ती। जमुनहा ग्राम पंचायत के हरदत्तनगर गिरंट ग्राम पंचायत में ग्राम प्रधान पर गोशाला का सारा सामान उठा ले जाने का आरोप लगाया गया है। त्रिस्तरीय पंचायत समिति के सदस्यों ने ग्राम प्रधान पर कार्रवाई की मांग की है। हरदत्त नगर गिरंट के त्रिस्तरीय समिति की अध्यक्ष गुड़िया और सहयोगी सदस्य त्रिभवन प्रसाद व उपासना ने हरदत्तनगर गिरंट थाने में तहरीर देकर आरोप लगाया है कि प्रधान विजय कुमार ने गोशाला का सारा सामान रात में अपने लोगों ने उठवा लिया है। आरोप है कि छह माह पहले वित्तीय गड़बड़ी में ग्राम प्रधान का खाता सीज कर दिया गया था। इसके बाद विकास कार्यों के लिए त्रिस्तरीय पंचायत समिति बनाई गई। लेकिन गोशाला का कार्यभार ग्राम प्रधान ने नहीं छोड़ा। इस पर 19 मई को ग्राम पंचायत सचिव राम दर्शन के सामने ग्राम प्रधान से गोशाला का चार्ज लिया गया। इस पर नाराजा ग्राम प्रधान के समर्थकों ने गोशाला का सारा सामान रात में उठा लिया। यहां तक कि गोशाला में बिजली सप्लाई के लिए लगवायी गई केबिल भी खोल ली। जिससे बिजली सप्लाई बाधित हो गई। इसके कारण त्रिस्तरीय समिति ने जनरेटर मंगवाया और मोटर चलाकर गायों को पानी पिलाया। इसके साथ ही खूंटा उखाड़ पर फेंक दिया और चारा भूसा पर रोक लगा दी। समिति ने ग्राम प्रधान पर कार्रवाई करने की मांग की है।

बच्चों में नेतृत्व क्षमता विकसित करने को बाल मतदान जरूरी -अदनान

संवाददाता–बलरामपुर। तुलसीपुर तहसील मुख्यालय के बैरागीपुरवा के मॉडर्न पब्लिक स्कूल में मतदाता जागरूकता अभियान के तहत बाल सांसद गठन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम को लेकर विद्यालय में बाल मतदान केन्द्र बनाया गया। जिसमें दो अलग–अलग बूथों पर छात्रों ने ईवीएम के माध्यम से मतदान किया। मॉडर्न पब्लिक स्कूल में बाल संसद गठन के साथ मतदाता जागरूकता कार्यक्रम के तहत निष्पक्ष चुनाव प्रक्रिया का आयोजन किया गया। निर्वाचन प्रक्रिया में लगभग 50 बच्चे प्रत्याशी के रूप में खड़े हुए। लगभग 500 बच्चों ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया। बाल संसद कार्यक्रम के मुख्य अतिथि तुलसीपुर नगर पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि अदनान फिरोज रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यालय प्रबंधक राजकुमार जायसवाल ने किया। मुख्य अतिथि ने कहा कि शिक्षा के साथ–साथ बच्चों को बाल संसद गठन के माध्यम से नेतृत्व क्षमता की जानकारी देना एवं मतदान के प्रति जागरूक करना सराहनीय कदम है। आज के बच्चे देश के भविष्य हैं। इन्हें मतदान प्रणाली से अवगत होना जरूरी है। उन्होंने विद्यालय में आयोजित मतदाता जागरूकता कार्यक्रम मतदान प्रणाली सहित चुनाव प्रक्रिया आदि आयोजनों की सराहना की। विद्यालय प्रबंधक ने कहा कि उनका मुख्य उद्देश्य बच्चों का सर्वांगीण विकास करना है। इसीलिए शिक्षा के साथ–साथ विद्यालय में सामाजिक व सांस्कृतिक गतिविधियां समय–समय पर आयोजित होती रहती है। बाल संसद गठन एवं मतदाता जागरूकता कार्यक्रम के तहत विद्यालय में सभी प्रत्याशियों में से बच्चों द्वारा चुने गए विजयी प्रत्याशी को अपने कक्षा का मॉनिटर बनाया गया। इनमें मुख्य रूप से कक्षा तीन की महिमा कश्यप, कक्षा चार के विवेक, कक्षा पांच के रहमान, कक्षा छह की सोनाक्षी, कक्षा सात के अंकित मिश्रा, कक्षा 8–ए में सदानंद, कक्षा 8–बी में माही यादव व कक्षा–8सी के विकास यादव को क्लास मॉनीटर चुना गया। यह चुनाव निष्पक्ष व पारदर्शी तरीके से बच्चों को मतदान के माध्यम से कराया गया है। बच्चों ने मत पेटी में अपने वोट देकर चुनाव प्रक्रिया की बारीकी से जानकारी प्राप्त की।

बजली गिरने से झुलसी किशोरी की मौत

संवाददाता–महराजगंज। सोमवार की सुबह बिजली गिरने से झुलसी किशोरी की मौत हो गई। महराजगंज जिले के बॉर्डर पर स्थित कुशीनगर जनपद के नेबुआ नौरंगिया थाना क्षेत्र के देवतहा गांव के पास बाग में पौने छह बजे ननिहाल में रहने वाली शाहिना(12) कुछ बच्चों के साथ आम बीनने गई थी। तभी मौसम बिगड़ गया। उसी समय बिजली गिर गई, जिसकी चपेट में आकर वह झुलस गई। सुलेमान दीवान अपने निजी साधन से नतिनी शाहिना को लेकर घुघली सामुदायिक स्वास्थ केंद्र पहुंचे। डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। वह बचपन से अपनी ननिहाल में रहती है। मृतक सहिना छोटेपन से ही देवतहा निवासी अपने नाना सुलेमान देवान के यहां रहती थी। सहिना अपने तीन बहनों में छोटी तथा दोनों भाइयों से बड़ी थी।बच्ची के अचानक मौत से पूरे गांव में मातम सा छा गया।सुलेमान के दरवाजे पर गांव वालों की भीड़ लग गई तथा सहिना को देख सबकी आंखे सजल हो चलीं। घटना की सूचना पर उसके घर लोग जुट गए। परिजनों में चीख पुकार मची है।

सौम्य बने अग्रवाल महासभा के अध्यक्ष

संवाददाता–बलरामपुर। अग्रवाल सभा के अध्यक्ष निष्काम गुप्ता व निवर्तमान अध्यक्ष राजीव अग्रवाल के बलरामपुर से चले जाने के चलते अग्रवाल महासभा के अध्यक्ष का पद रिक्त हो गया था। सोमवार को महाराजा अग्रसेन मंदिर सभागार में चयन एवं कार्यकारिणी गठन कार्यक्रम संपन्न हुआ। जिसमें सर्वसम्मति से सौम्य अग्रवाल को अग्रवाल सभा का अध्यक्ष चुना गया है। यह जानकारी जन सम्पर्क अधिकारी शुभम बंसल ने दी। उन्होंन बताया कि अग्रवाल सभा के पदाधिकारियों की बैठक महाराजा अग्रसेन भवन में की गई। सभी पदाधिकारियों ने सर्वसम्मति से सौम्य अग्रवाल को अग्रवाल सभा का अध्यक्ष चुना है। मौजूद पदाधिकारियों ने सौम्य अग्रवाल को इस जिम्मेदारी का पद संभालने पर बधाई दी। नवागत अध्यक्ष की सहमति से कार्यकारिणी में दो नए सदस्य राज कुमार अग्रवाल एवं अंकित गोयल को सम्मिलित करते हुए 21 सदस्यों का चयन कर कार्यकारिणी को गठित किया गया। बैठक में अशोक कुमार गुप्ता, सुशील हमीरवासिया, सौम्य अग्रवाल, मनीष तुलस्यान, सुरेंद्र अग्रवाल, साकेत तुलस्यान, पंकज अग्रवाल व शरद अग्रवाल मौजूद थे।

श्री राम नगरी में मतदान के प्रति संत रहे जागरूक

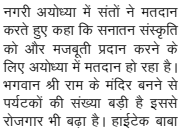

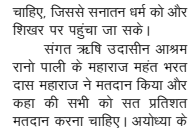

–भारतीय बस्ती संवाददाता– अयोध्या। भगवान श्री राम की नगरी अयोध्या में संतों ने मतदान करते हुए कहा कि सनातन संस्कृति को और मजबूती प्रदान करने के लिए अयोध्या में मतदान हो रहा है। भगवान श्री राम के मंदिर बनने से पर्यटकों की संख्या बढ़ी है इससे रोजगार भी बढ़ा है। हाईटेक बाबा एमबी दास, विहिप मिडिया प्रभारी शरद शर्मा, 84 कोसी परिक्रमा के आयोजन गया शरण महाराज ने मतदान किया और कहा की स्वच्छ सरकार चुनने के लिए अधिक से अधिक लोगों को मतदान करना चाहिए, जिससे सनातन धर्म को और शिखर पर पहुंचा जा सके।

संगत ऋषि उदासीन आश्रम रानो पाली के महाराज महंत भरत दास महाराज ने मतदान किया और कहा की सभी को सत प्रतिशत मतदान करना चाहिए। अयोध्या के मेयर तीन कलसा तिवारी मंदिर के महंत गिरीश पति त्रिपाठी ने अपनी धर्मपत्नी राजलक्ष्मी त्रिपाठी के साथ काशीराम कॉलोनी पोलिंग स्टेशन पर वोट डाला और कहा की अयोध्या के सभी मतदाता अपने मत का प्रयोग करें अधिक से अधिक संख्या में मतदान करें और जिससे आने वाले दो चरणों के चुनाव क्षेत्र के मतदाता अयोध्या से सीख लेकर अपने क्षेत्र में सत प्रतिशत मतदान करके सनातन धर्म की सरकार चुनने का कार्य करेंगे।

करतलिया बाबा आश्रम के पीठाधीश्वर महंत बाल योगी रामदास महाराज ने मतदान किया सेल्फी पॉइंट पर सेल्फी ली और कहां की इससे भी मतदान प्रतिशत बढ़ेगा क्योंकि वर्तमान समय में अधिकतर लोग सोशल मीडिया से जुड़े हैं और सेल्फी के लालच में ही बूथ तक तो आएंगे और मतदान करेंगे। उन्होंने अपील की कि देश में भाईचारा स्थापित करने के लिए सभी को मतदान करना चाहिए अधिक से अधिक लोग मतदान करें जिससे स्वच्छ सरकार का चयन हो।भाजपा नेता विशाल मिश्रा ने अपने मत का प्रयोग किया और कहा कि देश में पूर्ण बहुमत की सरकार बनने जा रही है।

जिला गठन के दिन श्रावस्ती में जीत का मंत्र फूंकेंगे प्रधानमंत्री

श्रावस्ती–संवाददाता। लोकसभा चुनाव को जीतने के लिए सभी दलों की ओर से पुरजोर कोशिश की जा रही है। ऐसे में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 22 मई को श्रावस्ती में जनसभा को संबोधित करके जीत का मंत्र फूंकेंगे। यह संयोग ही है कि 22 मई को ही श्रावस्ती और बलरामपुर जिले का गठन हुआ था। इसी दिन प्रधान मंत्री श्रावस्ती व बलरामपुर जिले की 27वीं वर्षगांठ पर संबोधित करेंगे। लोकसभा चुनाव के मतदान को अब कुछ ही दिन शेष बचे हैं। ऐसे में प्राचीन समय में कौशल राज्य की राजधानी व कुश की नगरी कही जाने वाली श्रावस्ती में भी चुनावी सरगर्मियां तेज हो गई हैं। इन सबके बीच प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी प्रधानमंत्री के रूप में पहली बार श्रावस्ती आ रहे हैं। जिले में 25 मई को मतदान है और चुनाव से ठीक तीन दिन पहले प्रधानमंत्री श्रावस्ती में जनसभा को संबोधित कर जीत का मंत्र फूंकेंगे। प्रधानमंत्री का उड़नखटोला 22 श्रावस्ती एयरपोर्ट पर उतरेगा। यहां से निकलकर प्रधानमंत्री एयरपोर्ट के ठीक सामने कार्यक्रम स्थल के मंच पर पहुंचेंगे और जनसभा को संबोधित करेंगे। प्रधानमंत्री के आगमन को लेकर लोगों में उत्साह है। कार्यक्रम स्थल पर तैयारियों को अंतिम रूप दिया जा रहा। 22 मई 1997 को तत्कालीन मुख्यमंत्री ने श्रावस्ती व जनपद का गठन श्रावस्ती बौद्धस्थली से किया था। अब इसे इत्तेफाक ही कहा जाएगा कि प्रधानमंत्री के श्रावस्ती आगमन का दिन भी 22 मई ही है। माना जा रहा है कि प्रधानमंत्री मोदी का दौरा भाजपा उम्मीदवार को फायदा पहुंचा सकता है। पीएम का श्रावस्ती आगमन व उनका जनसभा संबोधन चुनावी परिणाम में कितना कारगर साबित होगा यह आने वाला वक्त तय करेगा। लेकिन प्रधानमंत्री श्रावस्ती आ रहे हैं। इसको लेकर लोगों में खासा उत्साह देखा जा रहा है। 2014 में भाजपा से ही सांसद रहे दद्दन मिश्रा पर पार्टी ने दोबारा भरोसा जताया था और 2019 में दद्दन मिश्रा को एक बार फिर टिकट देकर चुनावी मैदान में उतारा था। जिसमें भाजपा उम्मीदवार को बेहद कम अंतर से शिकस्त का सामना करना पड़ा था। 2019 के चुनाव में कुल 11 उम्मीदवार चुनाव लड़े थे।

गर्मी हारी, बूथों पर जीतता दिखा मतदाताओं का हौसला

संवाददाता–बहराइच। तराई का पारा सोमवार को भी सामान्य से अधिक रहा। दिन चढ़ने के साथ जैसे–जैसे तापमान बढ़ा, लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए बूथों पर वोटरों की भी भीड़ भी बढ़ती गई। तपती दोपहरी में मतदान को लेकर मतदाताओं की आस्था डिगी नहीं, बल्कि बूथों के आसपास पेड़ों की छांव में बैठकर लोकतंत्र के उत्सव का भागीदार बनने को उत्सुक रहे। घाघरा और सरयू के कछार में आबाद कैसरगंज लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र के दोनों किनारों पर रहने वाले मतदाताओं का उत्साह चरम पर रहा। कस्बों में सन्नाटा पसरा रहा, तो ग्रामीण क्षेत्रों में मतदान को लेकर सड़कों पर कौतूहल रहा। चल रही गर्म हवाओं के बीच वोटर पूरी सुरक्षा के साथ हाथों में मतदाता पर्ची व आईडी लेकर बूथों की ओर रुख करते हुए दिख रहा था। बाराबंकी की सीमा से लगे कैसरगंज विधानसभा का 11 सौ रेती व गोडहिया नंबर एक के बूथ के आस–पास मतदाताओं की भारी भीड़ दिखी। बाग में पेड़ की छांव के नीचे मतदाताओं की टोली चुनावी चर्चा में मशगूल रही। हर कोई चुनाव के महत्व व उसके होने वाले लोकतांत्रिक मूल्यों को लेकर अपनी राय रख रहा था, लेकिन उनका वोट किस पार्टी व प्रत्याशी पर गया। इस पर जवाब देने से अदाय टालते दिखे। एक बुजुर्ग मतदाता अमरेश से पूछने पर उन्होंने बताया कि पहले महीनों से लाउड स्पीकर लगी गाड़ियां चलने लगती थी। लोग घर–घर जाकर प्रचार करते थे, लेकिन इस बार बहुत से लोगों ने प्रत्याशी को भी नहीं देखा होगा, लेकिन पार्टी के नाम पर ही वोट दिया गया है। बगल में बैठे रामनिवास तपाक से बोल उठे। कहा कि प्रत्याशी से उम्मीद न करें, पार्टी ही सर्वोपरि है। हम, आप व अन्य पार्टी बेस्ड हो गए हैं। लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए हर धर्म मानकर मतदान कर रहे हैं। प्रत्याशी की कार्य प्रणाली पर वोट करने का तो 80 फीसद मतदाताओं का मन ही नहीं होगा। लोकसभा सीट कैसरगंज में अवधियों के साथ पूर्वांचल के लोगों का भी गढ़ है। चुनाव में वह भी हार–जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते आ रहे हैं। इस चुनाव में भी उनकी उपस्थिति व मतदान सभी दलों के लिए अहम होगा। खासकर घाघरा के कछार में पूर्वांचल के लोगों बड़ी संख्या में आबाद हैं। चुनावों के दौरान प्रमुख पार्टियों की नजरें पूर्वांचल के वोटरों को साधने में रहती हैं। इस बार भी ऐसे क्षेत्रों में भाजपा व सपा ने साधने के लिए खूब पसीना बहाया है। लोकसभा चुनाव लड़ रहे प्रत्याशियों की ओर से क्षेत्र में मतदाताओं की राय सीधे जानने व उनको साधने के लिए बड़े पैमाने पर पंचायतों में अपने खबरचियों को चयनित कर जिम्मेदारी सौंपी थी।

आग लगने से कई दुकानों का सामान जला

संवाददाता–बहराइच। नानपारा कस्बे के मिहींपुरवा मार्ग स्थित सब्जी मंडी परिसर में रविवार रात आग लग गई। आधा दर्जन दुकानें आग की चपेट में आ गईं। दमकल कर्मियों ने कड़ी मशक्कत से आग पर काबू पाया। जिससे लगभग पांच लाख की सम्पत्ति जलकर नष्ट होने का अनुमान है। नानपारा कोतवाली के मिहींपुरवा मार्ग पर सब्जी मंडी लगती है। इसी ओर रविवार रात लगभग 11रू30 बजे आग लग गई। जब तक लोग दौड़े, तब तक राजेश की चाय की दुकान, ताजे की पान दुकान, हमीद की फर्नीचर, बादशाह की सब्जी दुकान चपेट में आ गई।

चलती ट्रेन के आगे कूदा अधेड़, कटकर मौत

संवाददाता–बहराइच। बहराइच– गोंडा रेल प्रखंड पर शिवनगर रेलवे क्रासिंग के पास सोमवार दोपहर गोरखपुर से आ रही पैसेंजर ट्रेन के आगे एक अधेड़ कूद गया। जिससे उसकी मौत हो गई। कुछ देर बाद ट्रेन स्टेशन को रवाना हुई। गोंडा से आ रही मेमो ट्रेन को भी रुकना पड़ा। शव की पहचान होते ही परिजनों में कोहराम मच गया है। देहात कोतवाली के बहराइच– गोंडा हाईवे के शिवनगर रेलवे क्रासिंग के पास सोमवार दोपहर लगभग दो बजे गोरखपुर से बहराइच आ रही ट्रेन नम्बर 05131 के सामने ट्रेक से कुछ दूरी पर खड़ा अधेड़ कूद गया। जिससे कटकर उसकी दर्दनाक मौत हो गई। चालक ने ट्रेन रोक हादसे की सूचना स्टेशन मास्टर को दी। कुछ देर बाद ट्रेन रवाना हुई। उधर गोंडा से बहराइच आ रही मेमो ट्रेन को भी कुछ समय को रुकना पड़ा। स्टेशन अधीक्षक ने कोतवाली पुलिस को जानकारी दी, सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची।

कुछ लोग संविधान बदलना चाहते हैं, जनता उन्हें बदल देगी –अखिलेश यादव

संवाददाता–सिद्धार्थनगर। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा 400 पार का नारा देती है। वह 400 नहीं, बल्कि 143 सीट भी नहीं जीत पाएगी। पहले गरीबों के राशन में चना, रिफाइन दिया जा रहा था। अब उसे कम कर दिया गया। जैसे खाद बोरी से चोरी हो गई। वैसे ही राशन की चोरी की जा रही है।

अखिलेश सोमवार दोपहर सिद्धार्थनगर जिले के बीएसए ग्राउंड में समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी भीष्मशंकर उर्फ कुशल तिवारी के समर्थन में आयोजित जनसभा को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि 2024 समुद्र मंथन का चुनाव है। कुछ लोग संविधान बदलना चाहते हैं, जनता उन्हें बदलेगी। मंत्री मंडल के साथ मीडिया मंडल भी बदल जाएगा। उन्होंने कहा कि भाजपा के वादे झूठे निकले। किसानों की आय दुगना करने का वादा किया। किसानों पर कर्ज बढ़ रहा है। बड़े उद्योगपतियों का कर्ज माफ किया जा रहा है। किसान के खिलाफ काला कानून लाया जा रहा है। किसानों ने आंदोलन किया तो उसे वापस लेना पड़ा। उन्होंने हा कि चार जून के बाद हमारी सरकार बनेगी तो किसानों का कर्ज माफ किया जाएगा। किसानों का एमएसपी के लिए कानून बनेगा। इस सरकार में जो भी परीक्षा हुई, सभी का पेपर लीक हो गया। नौजवान जानते होंगे एक, दो नहीं, दस परीक्षाओं के पेपर लीक हुए हैं।नौजवान पुलिस की परीक्षा देकर घर आ रहे हैं तो पता चल रहा है कि पेपर लीक हो गया। अभी तक 60 लाख बच्चों का पेपर लीक हुआ। यदि एक परिवार से तीन लोगों को जोड़ लें तो एक करोड़ 80 लाख वोट कम हो गया।

सिद्धार्थनगर का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि सिद्धार्थनगर में कोई निवेश आया हो तो बताओ। उल्टा पुल्टा मुख्यमंत्री बताएं कि उन्होंने निवेश के लिए क्या किया। उन्होंने कहा कि पेपर लीक सरकार ने कराया है। पेपर लीक करने वालों पर बुलडोजर चला क्या। नौजवान सड़क पर दौड़ते थे कि सेना में भर्ती हो जाएंगे, पर उन्होंने अग्निवीर की आधी अधूरी नौकरी दी। अखिलेश ने कहाकि मेरी सरकार बनने पर 30 लाख नौकरी देंगे। अग्निवीर को पूरी तरह से समाप्त किया जाएगा। बीजेपी वाले आ गए तो खाकी की नौकरी तीन साल की हो जाएगी। क्या आपको पता है हवाई जहाज, रेलवे स्टेशन बिक जाएगा। क्या पता था कि बोरी खाद चोरी हो जाएगी। राशन बढ़ाएंगे। उसकी गुणवत्ता को ठीक करेंगे। डाटा फ्री देंगे। डाटा से जानकारी मिलेगी। अखिलेश ने कहा कि चार चरणों में पड़ रहे वोट से भाजपा की हालत खराब हो गई है। जनता से पूछा कि इंडी गठबंधन की हवा चल रही है या नहीं। कहा कि आज मौसम भी बदल गया है। बाइक महंगी, दवा महंगी हुई। पहले 500 एमजी की पैरासिटामोल खाने से बुखार उतर जाता था। अब 650एमजी खाना पड़ रहा है। बताओ कि मंहगाई बढ़ी की नहीं। वैक्सीन वालों से पैसा वसूलने की बात हो रही है। कंपनी वाले कहते हैं कि वापस लेंगे। कंपनी वाले कहते हैं कि वापस लेंगे, जो वैक्सीन शरीर में चली गई, वह कैसे वापस होगी। ये बीजेपी वाले संविधान के पीछे पड़े हैं। यदि बीजेपी जीत गई तो ये संविधान है वह छीन लेंगे। हमें वोट देने का अधिकार नहीं मिलेगा। बाबा साहब का संविधान बचाना है।

पूर्व सीएम अखिलेश यादव ने कहा, यूपी की 80 सीटें हार रही भाजपा– कसा तंज

संवाददाता–संतकबीरनगर। सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि यूपी की 80 सीटें भाजपा हार रही है। इंडिया गठबंधन की सरकार बनने पर गरीब महिलाओं के खाते में हर साल एक लाख रुपये भेजे जाएंगे। इसके साथ ही 30 लाख नौकरियां बेरोजगारों को दी जाएगी, यह चुनाव संविधान बचाने का चुनाव है। हालांकि इस दौरान एक बार फिर भारी भड़ी उमड़ने से अव्यवस्था फैलने जैसी नौबत आ गई। सुरक्षाबलों ने किसी तरह स्थिति को नियंत्रण में किया। अखिलेश, सोमवार को घनघटा के द्वाबा विकास इंटर कॉलेज में इंडिया गठबंधन के प्रत्याशी के पक्ष में चुनावी जनसभा को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि यह हमारे और आप के भविष्य का चुनाव है। आने वाली पीढ़ी का चुनाव है। इस चुनाव से संविधान को बचाया जा सकेगा। जैसे समुद्र मंथन हुआ था उसी तरह से 2024 में संविधान मंथन होने जा रहा है। एक तरफ वो लोग हैं, जो संविधान को खत्म करना चाहते हैं और दूसरी तरफ इंडिया गठबंधन है, जो संविधान को बचाना चाहती है।

10 साल की केंद्र सरकार और सात साल की यूपी सरकार ने किसान, नौजवानों को धोखा देने का कार्य किया है। भाजपा ने कहा था कि सत्ता में आने के बाद किसानों की आय दोगुनी कर देंगे। किसी की आय दो गुनी नहीं हुई बल्कि जो आय थी वह भी खत्म हो गई। किसानों को जानबूझ कर डीएपी के साथ नैनों खरीदने का दबाव बनाया। नैनों बनाने वाले भारी कमीशन देकर भारत छोड़कर चले गए। यूपी सरकार बेरोजगारों को नौकरी नहीं देना चाहती है। इसलिए हर परीक्षा का पेपर लीक करा दे रही है। युवाओं का एक तिहाई जीवन बर्बाद कर दिया। इंडिया गठबंधन की सरकार बनने पर 30 लाख नौकरियां दी जाएंगी।

जो राम को लाए हैं, हम उनको लाएंगे –आचार्य सत्येन्द्र दास

संवाददाता–अयोध्या। लोकसभा चुनाव के पांचवे चरण में आज फैजाबाद क्षेत्र में मतदान हो रहा है। इस दौरान श्री राम जन्मभूमि मंदिर के मुख्य पुजारी आचार्य सत्येन्द्र दास ने भी फैजाबाद में वोट डाला। आचार्य सत्येन्द्र दास ने कहा कि मैं चाहता हूं कि देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक बार फिर बने। जो राम को लाए हैं हम उनको लाएंगे। उन्होंने कहा कि 500 वर्ष की मेहनत है और देश का विकास होगा। उन्होंने लोगों से भी वोट डालने की अपील की। उन्होंने कहा कि मतदान हर किसी का अधिकार है और किसी को भी इसे छोड़ना नहीं चाहिए। वोट किस को दिया जाए, व्यक्ति या पार्टी प्रधान होता है। यहां पर प्रधानता पार्टी की है। जो पार्टी सबका साथ और सबका विकास की घोषणा करती है और ऐसी भावना रखती है उसी पार्टी का साथ देना चाहिए। ऐसे ही देश का विकास होगा। बहुत जरूरी है कि जो अभी बीजेपी सरकार है और पीएम मोदी दोबारा पीएम बने। मोदी फिर से प्रधानमंत्री बनेंगे और भाजपा सरकार सत्ता में आएगी, मैंने इस भावना के साथ वोट किया है। पीएम मोदी के साथ राम लला का आशीर्वाद है। मैं चाहता हूं कि देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक बार फिर बने। उन्होंने कहा कि जो राम को लाए हैं हम उनको लाएंगे। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी ने वह किया है जो अन्य नहीं कर सके। 500 वर्ष की मेहनत है। साथ ही लोकसभा चुनाव के लिए अपना वोट डालने के बाद, हनुमान गढ़ी मंदिर के पुजारी महंत राजू दास ने कहा कि मैंने अपना वोट डाल दिया है। मैं प्रत्येक मतदाता से अपील करता हूं कि वे बाहर आएं और भारत के विकास के लिए, देश को वैश्विक मंच पर स्थापित करने के लिए वोट करें। पीएम मोदी के हाथों को मजबूत करें। अब की बार 400 पार, फिर एक बार मोदी सरकार।

समझौता न करने पर दबंगों ने मारपीट कर किया लहूलुहान

संवाददाता–गोरखपुर। गोला थाना क्षेत्र के ग्राम अकोल्हा ऊंचागांव के एक व्यक्ति को पुराने मुकदमे में सुलह न करने के कारण कुछ दबंगों ने मारपीट कर लहूलुहान कर दिया। इससे युवक बेहोश हो गया। परिजन उसे वाहन से थाने पर लेकर आए। पुलिस ने सीएचसी गोला पर ले लेकर इलाज कराया।

ग्राम अकोल्हा निवासी हरेंद्र देव यादव ने थाने में दी गई तहरीर में लिखा है कि वह बाहर नौकरी करता है। छुट्टी लेकर आज रविवार को घर आया। शाम 5 बजे गांव के बाहर नहर की पुलिया पर बैठा था। इस दौरान गांव के दो लोग आए। पुराने मुकदमे में समझौता करने का दबाव बनाने लगे। समझौता न करने पर वे मारने–पीटने लगे। गला दबाकर जान मारने की कोशिश की। जब गांव के लोग जुटने लगे तो वे लोग लोहे की रॉड से सिर पर प्रहार कर फरार हो गए। उसके बाद वह बेहोश हो गया। युवक के चेहरे और आंख पर चोट आई है। नाक–मुंह से अभी खून बह रहा है। समाचार लिखे जाने तक रिपोर्ट दर्ज नहीं हुई थी।

ट्रेलर की चपेट में आने से दो युवकों की मौत

संवाददाता–गोरखपुर। गोरखपुर–वाराणसी हाईवे पर गगहा क्षेत्र में युको बैंक के पास बाइक सवार दो युवकों की सोमवार को सड़क हादसे में मौत हो गई। डिवाइडर से टकराकर दोनों युवक बाइक सहित सड़क पर गिर गए उसी दौरान तेज रफ्तार से आ रहे ट्रेलर ने उन्हें कुचल दिया। दर्दनाक हादसे में शव के परखच्चे उड़ गए। पुलिस ने किसी तरह क्षत–विक्षत शव पोस्टमार्टम के लिए भेजा। इनमें से एक की शिनाख्त नहीं हो पाई है। गगहा थानेदार के मुताबिक बाइक सवार दोनों युवक गोरखपुर से बड़हलगंज की तरफ जा रहे थे। दोपहर बाद करीब 3.30 बजे रफ्तार की वजह से बाइक सवार युवक अनियंत्रित होकर डिवाइडर से टकरा गया और बाइक सहित दोनों सड़क पर गिर गए। पीछे से आ रही तेज रफ्तार ट्रेलर उन्हें रौंदते हुए निकल गई। दोनों युवकों के शव के लोथड़े सड़क पर बिखर गए। स्थानीय लोगों की सूचना पर पहुंची गगहा पुलिस ने सड़क पर बिखरे क्षत–विक्षत शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। उनकी जेब से आधार कार्ड व मोबाइल मिला। मोबाइल पूरी तरह टूट चुका था। आधार कार्ड से एक की पहचान रामानंद शर्मा निवासी कसिहार के रूप में हुई, जबकि दूसरे की पहचान नहीं हो पाई है। सीसी फुटेज के आधार पर गाड़ी की तलाश की जा रही है।

वन विभाग की छापेमारी में छह बोटा अवैध साखू बरामद, मुकदमा दर्ज

संवाददाता–गोरखपुर। बांकी रेंज क्षेत्र के अधिकारियों की छापेमारी में क्षेत्र के जंगल डुमरी नम्बर एक में सोमवार की सुबह एक व्यक्ति के घर से साखू के छह बोटा लकड़ी बरामद हुई है। लकड़ी अवैध बतायी जा रही है। अधिकारियों द्वारा वन अधिनियम के तहत केस दर्ज करते हुए लकड़ी कब्जे में ले ली है। मिली जानकारी के अनुसार सुबह जंगल से अवैध लकड़ियों की कटान करके जंगल डुमरी में एक व्यक्ति के घर लकड़ी रखा जा रहा है। सूचना के बाद वन दरोगा दुर्ग दत्त राय ने बांकी रेंज के रेंजर जगदम्बा पाठक, फारेस्टर मनीष तिवारी के साथ मौके पर पहुंच गए। जहां कुछ लोग मौजूद होकर लकड़ी को गढ़ बना रहे थे। वन विभाग की टीम को देखते हुए आरोपित फरार हो गए। वन दरोगा के अनुसार मौके पर साखू के छह बोटा (लगभग 12 फिट) लकड़ी बरामद हुआ। साखू की लकड़ी जंगल की अवैध बतायी जा रही है। अधिकारियों ने लकड़ी को कब्जे में लेते हुए बांकी रेंज के भेलीनपुर चौकी लेकर चली गयी है। वन दरोगा ने बताया कि इस मामले में जंगल डुमरी नम्बर एक के तीन लोगों के खिलाफ भारतीय वन अधिनियम 1927 की धारा 26 के तहत केस दर्ज किया गया है। उन्होंने बताया कि आरोपितों की तलाश की जा रही है। ग्रामीणों में चर्चा है कि यहां साखू के अवैध लकड़ी का कारोबार बड़े पैमाने पर होता है। जंगल से साखू के पेड़ काट कर तस्कर लाते हैं और यहां हाथ से संचालित छोटे कटर मशीन से लकड़ी को चीरने के साथ ही विभिन्न दरवाजा, जंगला आदि बड़े पैमाने पर तैयार किये जाते हैं। बताया जा रहा है उनके इस कारोबार में जिम्मेदारों की भी मिलीभगत होती है।

चाचा ने खाया जहर, मजाक समझ भतीजी ने भी खा लिया, दोनों की मौत

संवाददाता–गोरखपुर। खजनी इलाके के मुहुआडाबर गांव में जहर खाने से रविवार देर रात चाचा–भतीजी की मौत हो गई। जहर खाने के बाद तबीयत बिगड़ने पर परिवारीजनों ने दोनों को बचाने का प्रयास किया। उन्हें अस्पताल ले गए, जहां डॉक्टरों ने दोनों को मृत घोषित कर दिया। चाचा ने जहां पत्नी के मायके जाने पर विवाद में जहर खाया, वहीं भतीजी को लगा चाचा जहर को लेकर मजाक कर रहे हैं और उसने भी जहर खा लिया। पुलिस ने दोनों शवों को पोष्टमार्टम के लिए भेज दिया। खजनी पुलिस ने बताया कि महुआडाबर गांव निवासी करन कुमार और उसकी पत्नी के बीच पारिवारिक विवाद हो गया था। इसके बाद वह अपने मायके बेलीपार चली गई थी। पत्नी को मनाने के लिए शनिवार को करन भी ससुराल गया हुआ था। उसने काफी मान मन्नौवल की और घर चलने के लिए कहा लेकिन पत्नी घर आने को तैयार नहीं हुई। इसके बाद रविवार की शाम को शराब और जहर लेकर घर पहुंचा। करन इतने अवसाद में आ गया था कि शराब के साथ ही जान देने के लिए वह जहर भी खा रहा था। बताया जा रहा है कि उसी वक्त उसकी भतीजी संजना भी वहां पहुंची और उसने जहर की तरफ इशारा करते हुए पूछा कि चाचा आप यह क्या खा रहे हैं? करन ने बताया कि मैं जहर खा रहा हूं। संजना को लगा चाचा उससे झूठ बोले रहे हैं, कोई जहर खाता है क्या। मजाक–मजाक में संजना ने भी अपने मुंह में जहर डाल लिया। इसके बाद दोनों की हालत बिगड़ने लगी। जलन और उल्टी होता देख परिवारीजनों ने बीआरडी मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया। देर रात दोनों की मौत हो गई।

भारत के भविष्य का निर्माण भारत की कक्षाओं में होता है –प्रो. राजशरण शाही

संवाददाता–गोरखपुर। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद गोरखपुर महानगर द्वारा लोकतंत्र में शिक्षक की भूमिका विषय पर संगोष्ठी दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय के गोरखनाथ साहित्यिक केंद्र में आयोजित किया गया। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो. राजशरण शाही ने कहा कि लोकतंत्र के सभी क्षेत्रों को शिक्षक प्रभावित करता है, लोकतंत्र के उत्थान में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण होती हैं। भारत के भविष्य का निर्माण भारत की कक्षाओं में होता है, राष्ट्र के उत्थान की दिशा को शिक्षक तय करता है। भारत की शिक्षा व्यवस्था पूरी दुनिया को प्रभावित करती है, शिक्षक भारत की सांस्कृतिक विरासत को सहेजने का कार्य करता है। शिक्षक हमेशा प्रेरक की भूमिका में समाज जीवन में खड़ा रहता है,

अभाविप व्यक्ति निर्माण से समाज निर्माण तथा समाज निर्माण से राष्ट्र पुनः निर्माण में विश्वास रखता है। भारत के प्रति हम शिक्षकों को अपनी भूमिका का कुशलता पूर्वक निर्वहन करना होगा। दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. ओम प्रकाश सिंह ने कहा कि आज भारत का गौरव पूरी दुनिया में बढ़ रहा है, भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। भारत में पुनर्जागरण भाग दो चल रहा है। चुनाव एक ऐसा उपहार है जो आगामी पाँच वर्षो के लिए हमें एक मजबूत सरकार का निर्माण करता है, युगांतरकारी परिवर्तन में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण रही हैं। सृजन और संहार दोनों शिक्षक की गोद में पलता है, शिक्षक पीढ़ी की नहीं बल्कि पीढ़ियों का निर्माण करता है। कार्यक्रम का आभार ज्ञापन अभाविप गोरखपुर महानगर अध्यक्ष डॉ. विवेक शाही तथा संचालन अभिजित शर्मा ने किया। इस अवसर पर अभाविप राष्ट्रीय कार्यकारिणी परिषद की विशेष आमंत्रित सदस्य प्रो. उमा श्रीवास्तव, विभाग संगठन मंत्री सौरभ, प्रांत अध्यक्ष डॉ. राकेश सिंह, प्रांत मंत्री मयंक राय, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य शक्ति सिंह, अनुराग मिश्र, महानगर मंत्री शुभम राय, पीयूष मिश्र, अर्पित कसौधन,हर्षित मालवीय, अनुभव शाही, अभिषेक मौर्य, अमन सिंह, तोष निधि त्रिपाठी, दीपक पांडेय सहित अन्य शिक्षक तथा छात्र उपस्थित रहे।

भाई के अन्तिम संस्कार में आया युवक सरयू नदी में डूबा

संवाददाता–गोरखपुर। भाई के अन्तिम संस्कार के बाद चिता की राख को जल में प्रवाहित करने के दौरान सोमवार को पैर फिसलने से युवक सरयू नदी में डूब गया। काफी तलाश के बाद भी युवक का कहीं पता नहीं चला। एसडीआरएफ की टीम उसकी तलाश में जुटी है।

बड़हलगंज इंस्पेक्टर ने बताया कि गगहा थाना क्षेत्र के कोटियाबाबू टोला मठिया निवासी 35 वर्षीय दुर्गविजय निषाद पुत्र स्व. सुदर्शन निषाद के भाई राधेश्याम निषाद का निधन हो गया था। सोमवार को शव का अन्तिम संस्कार बड़हलगंज में मुक्तिपथ धाम पर किया गया। भाई की चिता की आग ठंडी होने पर दुर्गविजय निषाद सरयू नदी में राख प्रवाहित कर रहा था। इस दौरान पैर फिसलने से दुर्गविजय निषाद का गहरे पानी में चला गया और डूब गया। स्थानीय गोताखरों ने खाफी देर तक तलाश की पर कहीं पता नहीं चला। बड़हलगंज कोतवाल ने एसडीआरएफ की मदद से तलाश शुरू कराई। देर शाम तक उसका पता नहीं चला था।

प्रारूप सी–1

(समाचार पत्र, टी.वी. मे प्रकाशन हेतु अभ्यर्थियों के लिए)

आपराधिक मामलो के बारे में घोषणा

(वर्ष 2011 की रिट याचिका (सिविल) सं0 536 में माननीय उच्चतम न्यायालय के दिनांक 25 सितम्बर 2018 के निर्णय के अनुसार) (पब्लिक इंटरेस्ट फाउंडेशन और अन्य बनाम भारत संघ और अन्य)

अभ्यर्थी का नाम और पता– राम प्रसाद चौधरी ग्राम– जिगिना पोस्ट एकडंगी जनपद सन्तकबीर नगर।

राजनैतिक दल का नाम– समाजवादी पार्टी

(निर्दलीय अभ्यर्थी यहां ''निर्दलीय'' लिखे)

निर्वाचन का नाम– लोकसभा सामान्य 2024

निर्वाचन क्षेत्र का नाम– 61–बस्ती सामान्य

मै, राम प्रसाद चौधरी (अभ्यर्थी का नाम), उपर्युक्त निर्वाचन के लिए अभ्यर्थी, सार्वजनिक सूचना हेतु अपने आपराधिक पूर्ववृत्त के बारे में निम्नलिखित विवरणों की घोषणा करता हूँ।

(क) लंबित आपराधिक मामले

क्र. सं.	न्यायालय का नाम	मामले की संख्या एवं तारीख	मामले (मामलों) की स्थिति	संबंधित अधिनियमों की धारा (धाराएं) एवं अपराध (अपराधों) का संक्षिप्त विवरण
1	C.J.M. / विशेष न्यायालय M.P.M.L.A. बस्ती	1337 / 16	लम्बित	धारा 147,148,149, 353, 188, 504, 506 I.P.C. चुनाव से सम्बंधित
2	C.J.M. / विशेष न्यायालय M.P.M.L.A. बस्ती	6615 / 23	लम्बित	धारा143, I.P.C. 51 (बी) आपदा प्रबंधन अधिनियम 2005
3	C.J.M. न्यायालय बस्ती	6057 / 21	लम्बित	धारा143, I.P.C. 51 (बी) आपदा प्रबंधन अधिनियम 2005

(ख) आपराधिक मामलों के लिए दोषसिद्धि के मामलों के संबंध में विवरण

क्र. सं.	न्यायालय का नाम एवं आदेश (शो) की तारीख (खें)	अपराधिक मामलों के लिये दोष सिद्ध के मामलों के सम्बन्ध में विवरण	अधिकतम अधिरोपित दण्ड
1	एसीजेएम द्वितीय न्यायालय बस्ती 30 / 01 / 2023	चुनाव से सम्बंधित 180 रूपया अर्थ दण्ड	180 रूपया

अदालती नोटिस

(हेतु सन्दर्शित करने की सूचना साधारण प्रारूप)

न्यायालय– श्रीमान प्रथम अति0 सिविल जज (जू0डि0) बस्ती

जिला–बस्ती

वाद सं0 106 / 2021

श्रीमती सुभावती सिंह

बनाम

उदयभान सिंह आदि

1. सुरेन्द्र सिंह 2. रवीन्द्र सिंह 3. अनिल सिंह पुत्रगण उदयभान सिंह साकिनान मौजा पैकोलिया तप्पा अतरोह हाल मुकाम वार्ड नं–3 लोहिया नगर पोस्ट बभनान नगर पंचायत बभनान तप्पा अतरोह परगना बस्ती पश्चिम तहसील हर्रैया जिला बस्ती

तारीख पेशी 22–05–2024

चूंकि उपरीनामांकित ने इस न्यायालय में आवेदन किया है कि अतएवं आपके एतद द्वारा चेतावनी दी जाती है कि आप इसे आदेश के खिलाफ हेतु सन्दर्भित करने के लिये 2024 के माह 05 के 22 दिवस को 10.00 बजे पूर्वान्ह में स्वयं या सम्पर्क रूपेण अनुर्दिष्ट अपने अधिवक्ता द्वारा उपस्थित हो और ऐसा न करने पर उक्त आवेदन एक पक्षीय रूप से सुना जायेगा।

मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा सहित आज सन 20 के माह के दिवस को निकाली गयी।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन वास्ते करारवाद उमूर तनकीह तलब

(आर्डर 5 कायदा 1 व 5)

वाद सं0 1172 / 2023

अदालत–श्रीमान सिविल जज (जू0डी0) महोदय बस्ती जिला–बस्ती

फरीदा बानो आदि

बनाम

किशमतुन्निशा

1. किशमतुन्निशा पत्नी अशफाक निवासी मोहल्ला दक्षिण दरवाजा मंगल बाजार रोड पुरानी बस्ती तप्पा हवेली परगना बस्ती पूरब तहसील व जिला–बस्ती

तारीख पेशी 25–07–2024

हरगाह ने आपके नाम नालिश बाबत के दायर की है। लिहाजा आपक 25 माह 07 सन 2024 ई0 बवक्त 10 बजे दिन असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमें के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाब ऐसे सवालात का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके इजहार के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज जो जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तेमाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन वास्ते करारवाद उमूर तनकीह तलब

(आर्डर 5 कायदा 1 व 5)

वाद सं0 45 / 2021

अदालत–श्रीमान प्रथम अति0 सिविल जज (जू0डी0) महोदय बस्ती जिला–बस्ती

रामसिंह आदि

बनाम

सरकार उ0प्र0 आदि

1. सरकार उत्तर प्रदेश द्वारा जिलाधिकारी महोदय बस्ती 2. उप जिलाधिकारी हर्रैया–बस्ती 3. तहसीलदार महोदय हर्रैया–बस्ती

तारीख पेशी 28–07–2024

हरगाह ने आपके नाम नालिश बाबत के दायर की है। लिहाजा आपक 28 माह 07 सन 2024 ई0 बवक्त 10 बजे दिन असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमें के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाब ऐसे सवालात का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके इजहार के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज जो जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तेमाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

न्यायालय सिविल जज (सी0डि0) सिद्धार्थनगर स्थान द्वारा निकाली गयी उदघोषणा

प्रकीर्ण उत्तराधिकार वाद संख्या– 46 / 2023

प्रेमशीला उम्र करीब 21 वर्ष दत्तक पुत्री घीसा निवासिनी ग्राम बरगदवा पोस्ट उदयराजगंज तप्पा ऐखिन परगना नौगढ़ तहसील शोहरतगढ़ जनपद सिद्धार्थनगर

–प्रार्थी / आवेदक

बनाम

इस्टेट

प्रा0 पत्र अन्तर्गत दफा 372 भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम

तारीख पेशी 30–05–2024

अपने पिता / पुत्री मृतक घीसा पुत्र बरखू को देय ऋण और प्रतिभूतियों को वसूल करने के लिये प्रमाण पत्र की अभिप्राप्ति के लिये सन 1886 ई0 के अधिनियम 7 के अधीन उत्तराधिकार का आवेदन के लिये।

चूंकि ने प्रमाण पत्र को अभिप्राप्ति के लिये आवेदन दिया है और सन 2024 के 05 के 30 दिवस आवेदन को सुनवाई के लिये नियत हुआ है। अतः यह उदघोषणा निकाली जाती है कि जिस किसी को उक्त आवेदन के सम्बन्ध में आपत्ति हो वह स्वयं या अभिवक्ता द्वारा ..10 बजे पूर्वान्ह न्यायालय सिविल जज (सी0डि0) सिद्धार्थनगर में नियत दिनांक पर उप संजात होकर अपनी आपत्ति पेश करें। उक्त दिनांक के अवसान पर फिर किसी की आपत्ति न सुनी जायेगी और आवेदन के सम्बन्ध में यथोचित आदेश पारित होगा।

2024 के 05 के 20 दिवस को दिनांकित।

द0 हाकिम

दैनिक भारतीय बस्ती

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक प्रदीप चन्द्र पाण्डेय द्वारा दर्पण प्रिन्टिंग प्रेस वि0. नया हाल 1–4 A लोहिया काम्पलेक्स जिला पंचायत भवन गांधीनगर बस्ती (उ.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक दिनेश चन्द्र पाण्डेय

प्रबन्ध सम्पादक–दिनेश सिंह

संयुक्त सम्पादक–प्रदीप चन्द्र पाण्डेय

अयोध्या–फैजाबाद कार्यालय–

चतुर्भुजी मंदिर परिसर लक्ष्मण घाट

अयोध्या–फैजाबाद

लखनऊ कार्यालय–

आशियाना चौराहा, एल.डी.ए. कालोनी, सेक्टर एच, कानपुर रोड, लखनऊ।

गोरखपुर कार्यालय–

इलाहीबाग गोरखपुर।

मो09450567450 9336715406,

ई.मेल:bhartiyabasti@yahoo.com

bhartiyabasti@gmail.com